अन्तराशब्दशक्ति

वर्ष-1 अंक-8 मूल्य-25 रुपए फरवरी-2018 मासिक वेब पत्रिका

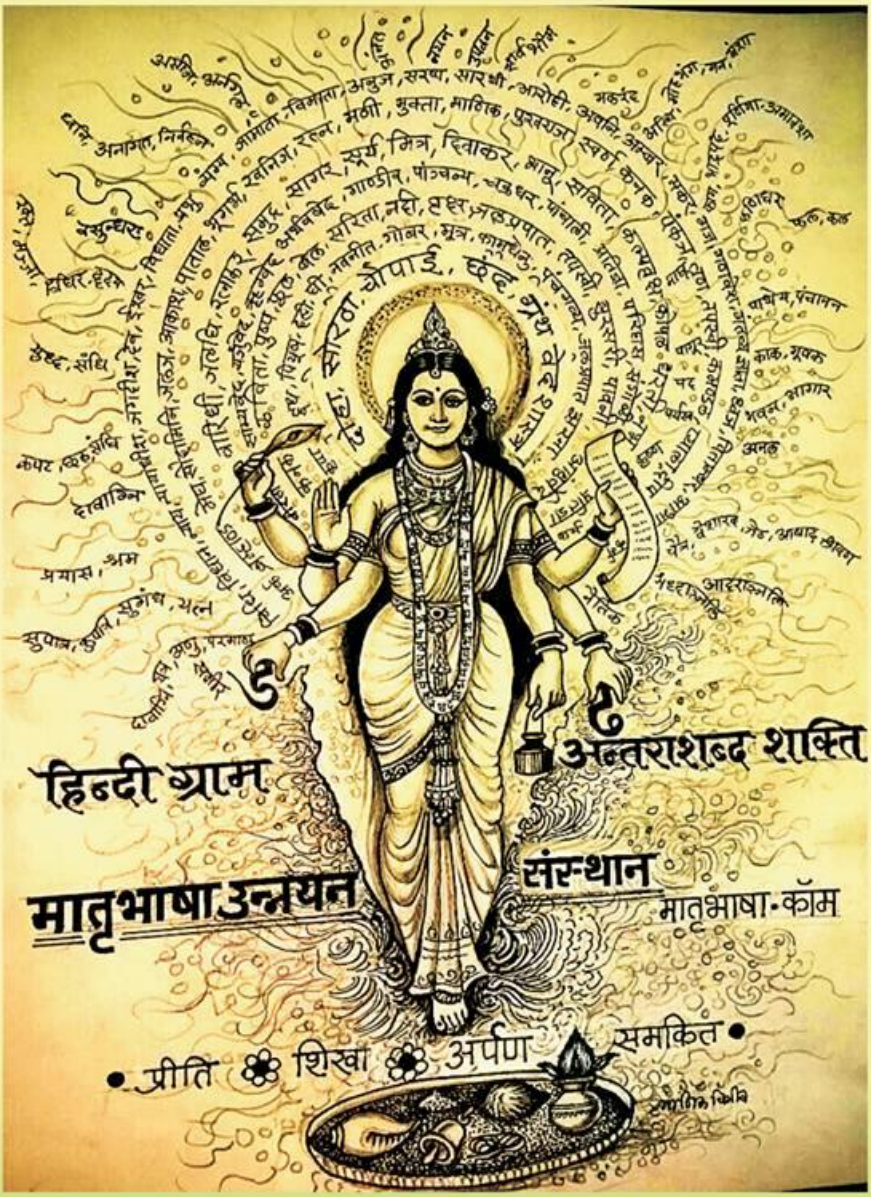

अन्तरा शब्दशक्ति सम्मान-2018

9 किताबों का विमोचन हुआ

अंतरा-शब्दशक्ति की सात किताबें-

मकरंद (दोहा-मुक्तक संकलन),
अपूर्वा (गीत-नवगीत संकलन),
गुंजन (गजल संग्रह),
स्पंदन (काव्य संकलन),
अनुबंध (काव्य संकलन)
कथासेतु (कथा संकलन)
विचार मंथन (आलेख संकलन)

संपादकीय

सहज, सरल और आत्मिक मिलन समारोह की चिरस्थाई यादें

करीब 4 माह का सतत प्रयास और देशभर के 100 से अधिक साहित्यकारों का सस्नेह आतिथ्य माँ अहिल्या की नगरी इंदौर में मिलना जिसने मालवा की रत्नगर्भा माटी को गौरवान्वित किया।

हिन्दी से सशक्त हस्ताक्षर डॉ.वेदप्रताप वैदिक जी का मुख्य आतिथ्य, साहित्यकार हरेराम वाजपेयी जी की अध्यक्षता सहित पतंजलि योगपीठ के योगप्रचारक प्रकल्प के आचार्य नवीन संकल्प जी व स्टेट प्रेस क्लब के अध्यक्ष प्रवीण खारीवाल जी के विशेष आतिथ्य ने प्रसंग को खास बना दिया। 9 पुस्तकों का एक मंच पर होना व 120 साहित्यकारों का सम्मान होना अपने आप में गौरव का विषय रहा ।मातृसंस्था हिन्दीग्राम व मातृभाषा उन्नयन संस्थान के साथ अन्तरा-शब्दशक्ति व मातृभाषा.कॉम का हिन्दी के प्रति उत्तरदायित्व निर्वाहन सबल रहा ।इसी तरह सबका प्रेम बना रहेगा, यही आशा है.....

डॉ.प्रीति सुराना
संस्थापक व सम्पादक- अन्तरा-शब्दशक्ति

प्रधान संपादक

डॉ.प्रीति सुराना

तकनीकी सम्पादक

डॉ.अर्पण जैन 'अविचल'

सम्पादकीय सलाहकार

श्री समकित सुराना
श्री बृजेश शर्मा 'विफल'
श्री कैलाश बिहारी सिंघल
श्री देवेन्द्र सोनी
श्री मुकेश दुबे
श्री केदार नाथ 'शब्दमसीहा'
श्री संजय कोचर
सुश्री कीर्ति वर्मा
सुश्री पिंकी परुथी 'अनामिका'
सुश्री अदिति रूसिया

ग्राफिक्स

मृदुल जोशी
सुश्री मीना कोशल

राजकीय प्रतिनिधी

सुश्री सोमा बिस्वास- दिल्ली
सुश्री वसुंधरा रॉय- महाराष्ट्र
सुश्री नसरीन अली 'निधी'- जम्मू एवं कश्मीर
मंगल प्रसाद पासवान- उत्तरप्रदेश
प्रकाश कायस्थ- आसाम
तपन कुमार गैन- पश्चिम बंगाल
अनिल कुमार शर्मा 'चिंतित'- हरियाणा
विवेकानंद पाण्डेय- छत्तीसगढ़
रिषभचंद रांका- राजस्थान
श्रीमन्नारायण चारी- तेलंगाना
सुश्री विभा श्रीवास्तव-बिहार
सुश्री पूजा टांक- तमिलनाडु
सुश्री अर्चना शर्मा-गोआ
नवीन संकल्प- उत्तराखण्ड

अन्तराशब्दशक्ति
मासिक वेब पत्रिका

वर्ष-1 अंक-8 मूल्य-25 रुपए
फरवरी-2018

क्र.	विषय	पृष्ठ क्रमांक
1.	संपादकीय	3
2.	पुस्तकलोकार्पण	4
3.	नौकरानी को महारानी न बनाएं हिन्दुस्तानी	5
4.	अंतरा शब्दशक्ति सम्मान के छाया चित्र	6 से 35
5.	इस पल मैं क्या कहूं	36
6.	सुनहरे पल	37
7	हाँ, उन आंखों में नींद नहीं होती जिनमें सपने होते हैं	38
8.	यादों की गठरी	39
9.	इंदौर में शब्दशक्ति एवं भाषा सारथी सम्मान आयोजन	40
10.	मधुर स्मृतियां	41
11.	मन के कोरे पृष्ठों पर...	42
12.	संस्मरण	43
13.	गैर जो सभी अपने से लगे	44
14.	काव्य पथ	45
15.	सम्मानित अतिथि	47
16.	क्या आप बनना चाहते हैं-भाषा सारथी	49
17.	हस्ताक्षर बदलो अभियान	50

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. प्रीति सुराना द्वारा एस-207, नवीन परिसर, इंदौर प्रेस क्लब, एम. जी. रोड इंदौर से प्रकाशित एवं ग्लोबल ग्राफिक्स ए.बी. रोड, इंदौर से मुद्रित। मो.-9009465259

किसी भी कानूनी विवाद का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा। शुल्क- 25 रु. www.antrashabdshakti.com

अन्तरा शब्दशक्ति एवं भाषा सारथी द्वारा भव्य पुस्तक लोकार्पण

तीन फरवरी 2018 को इंदौर के तुकोगंज के होटल साउथ एवेन्यू में अन्तरा शब्दशक्ति एवं भाषा सारथी के सौजन्य से भव्य पुस्तक लोकार्पण संपन्न हुआ . इसमें नौ पुस्तकों का लोकार्पण हुआ . इस कार्यक्रम में देश के 120 से अधिक साहित्यकारों को सम्मानित किया गया.

यह कार्यक्रम हिंदी को बढ़ावा और जन भाषा बनाने की मुहीम को लक्ष्य कर आयोजित किया गया था . श्री वेद प्रताप वैदिक जी ने इस विषय पर अपना ओजपूर्ण वक्तव्य रखा . हिंदी को देश भाषा बनाने के लिए हिन्दीग्राम और मातृभाषा उन्नयन संस्थान इस कार्य में अपनी अग्रणी भूमिका निभा रहा है .

मुख्य अतिथि के रूप में डा. वेद प्रताप वैदिक जी , अध्यक्ष के रूप में वरिष्ठ साहित्यकार श्री हरेराम वाजपेयी जी , अतिविशिष्ट अतिथि के रूप में स्टेट प्रेस क्लब के अध्यक्ष श्री प्रवीण कुमार खारीवाल जी व् पातंजलि योग पीठ से पधारे आचार्य श्री नवीन संकल्प जी थे .

कार्यक्रम में स्वागत उद्बोधन डा. अर्पण जैन ''अविचल'' जी ने किया . मंच सञ्चालन राशी पटेरिया जी ने किया . इस आयोजन में मकरंद, अपूर्वा , गुंजन , कथासेतु , अनुबंध,स्पंदन, मातृभाषा.कॉम सहित आचार्य श्री नवीन संकल्प जी की पुस्तक का विमोचन हुआ .

पूरा सभागार साहित्य साधकों से खचाखच भरा हुआ था . देश के चौबीस राज्यों से एक सौ बीस से अधिक साहित्य साधकों को यहाँ संस्था द्वारा सम्मानित भी किया गया .

इस कार्यक्रम की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में माँ हिंदी के चित्र का निर्माण और लोकार्पण एक उल्लेखनीय है .

डा. अर्पण जैन ''अविचल'' जी से वार्तालाप का सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ . इस दौरान उन्होंने हिंदी से जुड़े अनेक मुद्दों पर बात की . उनका मानना है कि जिस प्रकार बिना एकसाथ मिले किसी बड़े काम को साधा नहीं जा सकता उसी प्रकार बिना हिंदी को जनभाषा बनाए देश को भी आगे नहीं बढ़ाया जा सकता . देश में न्याय देश की भाषा हिंदी में होना चाहिए. कोई भी देश अपनी मातृभाषा के भाव में गूंगा ही रहता है . उन्होंने हिंदी को व्यापार की भाषा और रोजगार पैदा करने वाली भाषा बनाए जाने का पुरजोर समर्थन किया .

डॉ. प्रीति सुराना जी ने भी इस बात पर सहमती जताते हुए कहा कि हिंदी की उपेक्षा न की जाय और इसे शासकीय भाषा के तौर पर अपनाया जाय. साथ ही उन्होंने कहा कि देश की सभी भाषाओं और बोलियों को सहेजने की जरुरत है . उन्होंने आगे कहा कि यदि शिक्षण की भाषा हिंदी होती है तो उनका मानना है कि विद्यार्थियों के परिणाम और भी अच्छे आ सकते हैं . ज्ञान निर्माण यदि हिंदी में होगा तो निश्चय ही देश तरक्की और एकजुटता की राह पर अग्रसर होगा .

मेरा मानना है कि अंग्रेजी आज भी गुलामी का प्रतीक है . उसे एक भाषा के रूप में लिया जा सकता है किन्तु हिंदी को उसका राष्ट्रभाषा का पद देना बहुत जरुरी है . सभी विकसित देश अपने काम अपनी ही भाषा में करते हैं और भाषा एक अहम् कड़ी है मिलकर काम करने के लिए . इस दौरान हस्ताक्षर बदलो अभियान पर भी चर्चा हुई . हस्ताक्षर किसी भी व्यक्ति की पहचान होते हैं . यदि कोई अपनी माँ भाषा अर्थात हिंदी में अपनी पहचान नहीं बनाता है तो वह माँ का बेटा भी कहलाने का अधिकारी नहीं है . अंग्रेजी विश्व भाषा है ऐसा कहना भी छलावे के अतिरिक्त कुछ नहीं है . मात्र तीन प्रतिशत लोग अंग्रेजी बोलते हैं जबकि समग्र रूप से देखा जाय तो हिंदी बोलने समझने वालों की संख्या कहीं अधिक है .

हिंदी का विस्तार किसी शासकीय मुहीम से नहीं बल्कि जन मुहीम से ही संभव है. कार्यक्रम के अंत में शानदार भोज का आयोजन किया गया . डा. प्रीति सुराना जी ने सभी आगंतुकों का धन्यवाद ज्ञापित किया .

इस कार्यक्रम में शरीक होने के लिए मेरे साथ विख्यात साहित्यकार डा. पूरन सिंह जी , श्री मुकेश दुबे जी, श्री गुलशन प्रेम जी , श्री संजय साड़ी जी, भावना शर्मा जी , सुश्री सोमा बिस्वास जी , मीनाक्षी सुकुमारन जी , बहिन नीरजा मेहता जी , ऋषि अग्रवाल जी , कल्पना भट्ट जी , सैफुद्दीन सैफी जी सहित अनेक मित्र शामिल हुए .

बहिन प्रीति सुराना जी, शिखा जी, डा. अर्पण जैन ''अविचल'' जी , श्रीमती मुकेश दूबे जी का तहे दिल से आभारी हूँ जिन्होंने आतिथ्य सत्कार में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी . मुझे अनेक मित्रों से मिलने और इस सफल कार्यक्रम का साक्षी होने का सौभाग्य दिया .

-शब्द मसीहा

विश्व में प्रथम बार हिन्दी माँ का चित्र रुप अनावरित

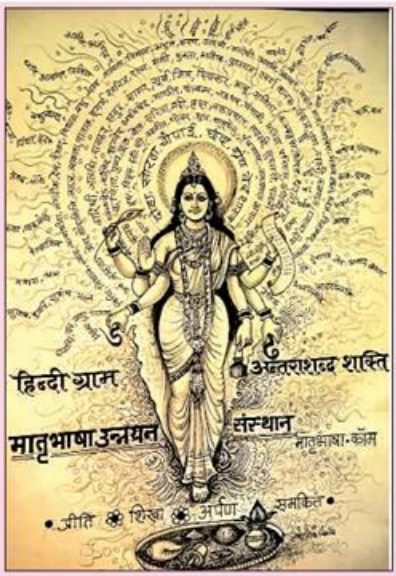

हिन्दी ग्राम के संस्थापक डॉ.अर्पण जैन ''अविचल'' की परिकल्पना को चित्रकार माणिक चित्रिव ने हिन्दी माँ का चित्र बनाया जिसका अनावरण अतिथियों द्वारा किया गया, हिन्दी माँ की वंदना सहयोगी डॉ.प्रीति सुराना ने लिखी ।

नौकरानी को महारानी न बनाएं हिन्दुस्तानी- डॉ.वैदिक

इंदौर । हिन्दी भाषा भारत का अभिमान है, जब हम चर्चिल को राष्ट्रपिता नहीं बोलते और बापू को आदर देते है तो फिर अंग्रेजी को महत्व क्यों दे रहे है हमें हमारी स्वभाषा से प्रेम करना चाहिए, अंग्रेजी नौकरानी है, उसे महारानी न बनाएं और हिन्दी में हस्ताक्षर करें।

उक्त उदगार डॉ.वेद प्रताप वैदिक ने अन्तरा शब्दशक्ति सम्मान 2018 के आयोजन में कहे, जो साउथ एवेन्यू होटल में सम्पन्न हुआ। साहित्य के क्षेत्र की ख्यात संस्था अन्तरा शब्दशक्ति व हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए कार्यरत हिन्दीग्राम व मातृभाषा उन्नयन संस्थान द्वारा शनिवार को इंदौर में समारोह आयोजित किया जिसमें मुख्य अतिथि प्रखर लेखक, चिंतक, भारतीय और अंतरराष्ट्रीय राजनीति के विश्लेषक डॉ. वेद प्रताप वैदिक थे व अध्यक्षता साहित्यकार हरेराम वाजपेयी ने की। साथ ही अति विशिष्ट अतिथि के रुप में स्टेट प्रेस क्लब के अध्यक्ष प्रवीण कुमार खारीवाल व पतंजली योगप्रचारक प्रकल्प हरिद्वार के आचार्य नवीन संकल्प थे। आयोजन में 9 पुस्तकों का विमोचन हुआ और साथ ही देश के हरियाणा, बिहार, तमिलनाडु, तेलंगाना, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र और पंजाब सहित 24 राज्यों से आए 120 साहित्यकारों का शाल, श्रीफल व प्रतिक चिन्ह देकर सम्मान किया गया। स्वागत उदबोधन डॉ.अर्पण जैन ''अविचल'' ने दिया व मंच संचालन विख्यात कवयित्री राशी पटेरीया ने किया।अन्त में आभार डॉ.प्रीति सुराना जी ने व्यक्त किया । आयोजन में वूमन प्रेस क्लब की अध्यक्षा शीतल रॉय, के बी एस प्रकाशन दिल्ली से संजय साफी, भावना शर्मा, स्टेट प्रेस क्लब के महासचिव विजय अड़िचवाल, इंदौर प्रेस क्लब के कार्यकारिणी सदस्य अजय भट्ट व विजय गुंजाल, भारत रक्षा मंच से कमल कुमार जैन, लक्ष्मीकांत पण्डित,आकाश चौकसे, भीम मैंदड़, रोहित त्रिवेदी सहित सैकड़ों लोग सम्मिलित हुए। उक्त जानकारी संस्थान के संवाद सेतु रोहित त्रिवेदी ने दी।

अंतरा शब्दशक्ति सम्मान-2018

अन्तरा शब्दशक्ति सम्मान
(२०१८)
पुस्तक विमोचन सह सम्मान समारोह
सहयोगी संस्थान

ाब्दशक्ति सम्मान

अन्तरा शब्दशक्ति सम्मान

शब्दशक्ति सम्मान
(२०१८)

का प्रतीक

अन्तरा

शब्दशक्ति

अन्तरा शब्दशक्ति
शब्दशक्ति सम्मान
(२०१८)

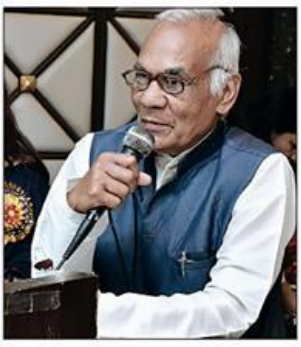

अन्तरा शब्दशक्ति सम्मान
(२०१८)
पुस्तक विमोचन सह सम्मान समारोह

अन्तरा
शब्दशक्ति

हिन्दीग्राम
अन्तरा
शब्दशक्ति

शक्ति सम्मान

अन्तरा शब्दशक्ति सम्मान

हिन्दीग्राम

हिन्दीग्राम

अन्तरा
शब्दशक्ति

हिन्दीग्राम
शब्दशक्ति

मन की बात-अंतरा के साथ

2010 से फेसबुक पर हूँ। नवम्बर 2011 से ब्लॉग पर लेखन कर रही हूं पर अचानक 20 फरवरी 2012 को सुगर लेवल के बहुत कम हो जाने से शरीर के दाएं हिस्से का बहुत कमजोर हो जाना और नागपुर केअर हॉस्पिटल से ये कहकर घर भेज दिया जाना कि ये हाईपोग्लुसोमिया का अटैक है जो नर्वस सिस्टम को डैमेज कर गया, पूरी तरह नार्मल होना संभव नहीं।

लौटकर घर आते ही निराशा ने घेर लिया, घर से निकलना लगभग बंद कर दिया, डॉ चाचा-चाची के क्लीनिक और होमियोपैथी डॉ मानकर दीदी डॉ चौधरी की देखरेख में समय कटता रहा, गहन निराशा में न चली जाऊं इसके लिए समकित ने एक उपाय निकाला कि पुराना लिखा हुआ सबकुछ ब्लॉग में लिखो, फेसबुक पर पोस्ट करो, ताकि मन को व्यस्त रखकर निराशा से दूर रह सको। 6 महीने लगे इन सब से बाहर निकलने में, आज भी गांव और परिवार के कई लोग ताने देते हैं कि सोशल मीडिया में ही नजर आती हूँ क्योंकि अपनी तकलीफों के कारण खुद को एक कमरे तक सीमित कर लिया था,.. ।

बहुत मुश्किल होता है जब पूरी तरह वर्किंग , घर, व्यापार और बच्चों में व्यस्तता वाली लाइफ को एक कमरे में सीमित कर लेना। लेकिन बहुत आसान होता है जब जुनून हो कि किसी पर निर्भर नहीं होना है, बच्चों के सामने निराश न होने का दृढ़ निश्चय और लेखन का साथ।

2012 के अंत तक फेसबुकिया लेखक बन ही गई और तब तक वापस कमजोर ही सही पर पैरो पर अपने चलना सीख लिया। प्रीति अज्ञात, पुनीत, सैनी जी जैसे अनेक साथियों ने विश्वास दिलाया, और 2013 में ही 'मन की बात' और 'मेरा मन' प्रकाशित हो गई। मई 2013 में मेरा मन का विमोचन जोधपुर में हुआ तब अपने पापा की आंखों में नमी और अपने बच्चों की आंखों में चमक ने तमाम विपरीत परिस्थितिओं के बाद भी सतत चलते रहने की प्रेरणा दी। तब से आज तक न कलाम रुकी न मैं। शुक्रगुजार हूँ समकित की जिन्होंने सही समय पर सही दिशा में मन को मोड़ दिया। यदि तब निराशा और लेखन में से एक को न चुना होता तो आज ये खुशी नसीब न होती।

बहुत घमंडी सी एक महिला जिसने इनबॉक्स में ताले डाल रखे थे, न शक्ल न अक्ल जाने किस बात का गुमान है जैसे अकेले ही सब कुछ कर लेगी वो भी आज के जमाने मे जहाँ आगे बढ़ना आसान नहीं है।

ये सब मेरे लिए कहे गए वो शब्द थे जो अपनों में से ही किसी ने कहे थे। खैर,...

समय गुजरता रहा, बिना मैसेंजर के भी रिश्तों के मामले में बहुत खुशनसीब रही। मुकेश भैय्या, अर्पण, गुलशन, केदार भाई, पवन, लोकेश, अनिल चिंतित, विफल जी, मनोज जी, गुंजन दी, पिंकी जी, कीर्ति, सुषमा, कैलाश भैय्या, रानी-प्रदीप जी, प्रीति अज्ञात, स्वाति, अंशु, आदित्य आदि स्वजनों से मिलकर बना एक छोटा सा ही सही पर अनूठा परिवार।

अगस्त 2012 एक साहित्यिक समूह 'मैखाना' जिसमें शामिल अर्पण और मृदुल जोशी जी सहित अनेक की रात भर की शेरो-शायरियां मेरे तकलीफ के दिनों में रात्रि जागरण का सहारा हुआ करती थीं। आदतानुसार कभी संवाद स्थापित नही किया पर मैखाना का परिचय आज मेरा परिवार है जिसपर जितना नाज करूँ कम है।

2015 से खुद को चारदीवारी के दायरे से बाहर निकाला, और पहली बार हम सब साथ साथ के आयोजन में बीकानेर अकेली गई। बहुत सारा डर, सभी लोग अनजान और एक ईमेल के आमंत्रण पर बीकानेर जाना थोड़ा अजीब था, वहां जाकर जोधपुर में संकलनों और मेरा मन के विमोचन में मिला बादल चौधरी मिला । पीछे से दी का सम्बोधन सुनकर जान में जान आई कोई तो था उस अनजान शहर में,.. । दीपक, कासिम भाई, आशा-गोवर्धन जी, शशि-किशोर श्रीवास्तव जी, सोमा विश्वास, संजय साड़ी, निवेदिता श्रीवास्तव, नेहा नाहटा, ऋषि अग्रवाल और कई नए रिश्तों से जुड़ी, परिचय का दायरा बढ़ता गया। और हिम्मत और आत्मविश्वास भी बढ़ा। फिर लगातार दिल्ली पुस्तक मेला, करनाल, भोपाल, ग्वालियर, पटना, ओरछा, झांसी, नागपुर, जबलपुर, इलाहाबाद, फरीदाबाद, अयोध्या, कश्मीर, हरिद्वार जैसे अनेकानेक यात्राएं सतत जारी रहीं।

2016 राष्ट्रीय कवि संगम से जुड़ना, और तब जाकर बालाघाट अपने ही शहर की संस्था सहमत में जगह बना पाना। महिलाओं के लिए जो जो समस्याएं आगे बढ़ने के लिए सामने आती है, परिवार और समाज की परिस्थितियां किस तरह अवसाद का और कलात्मकता के दमन के साथ साथ निजता के लिए हनन का कारण बनती है सब कुछ सहा,.. तब मन में एक इच्छा जागी की महिलाओं के लिए मुझे कुछ करना है।

जो सखियाँ शुरुआत से ही जुड़ी हैं मुझसे वो जानती हैं, सृजन, फिर सृजन फुलवारी, फिर राष्ट्रीय कवि संगम की सृजन फुलवारी, फिर सृजन- शब्द से शक्ति का, तक जा सफर कितना मुश्किल रहा मेरे लिए।

'सृजन- शब्दशक्ति' सम्मान समारोह 2016 में जैन प्रतिभा मंच से मनोज जैन 'मधुर' जी ने भोपाल के आयोजन ने मेरा साथ दिया, फिर राघवेंद्र ठाकुर सर के jmd पब्लिकेशन और जिज्ञासा सहित एक साल में 4 बड़े आयोजन किये, 'सृजन- शब्दशक्ति' इस दौरान 'अन्तरा-शब्दशक्ति' के रूप में अपनी पहचान बना चुका था। मन में एक इच्छा जागी वेब पत्रिका शुरू करनी है क्योंकि अंतरा के नाम से भोपाल से कोई और पत्रिका निकलती है अतः वैधानिक तौर पर सिर्फ अंतरा के नाम से रजिस्ट्रेशन सम्भव नहीं था, न संस्था का न पत्रिका का। तनाव में थी क्या करूँ। एक दिन मातृभाषा.कॉम के मेल में अर्पण का नाम देखा और कॉल कर लिया अचानक मेरे सपनों को पर मिल गए। बहुत अधिक व्याधियों के साथ एक बहुत सकारात्मक काम हुआ जुलाई में अन्तरापरिवार के लिए एक बड़ा सरप्राइज अन्तराशब्दशक्ति की मासिक वेब पत्रिका। शुरू के 3 महीने मेरे लिए मुश्किल थे सीखना घर बैठे सब कुछ इतना भी आसान नहीं, पर सब संभव किया डॉ. अर्पण ने।

समूह के नाम और समूह के नियमों को लेकर मनोज जी से मतभेद बढ़ते रहे । अगस्त में 7 संकलनों की घोषणा की जिसकी अंतिम तिथि 30 सितंबर रखी पर स्वास्थ्य बिगड़ने से काम टलता गया। अकेले सब कैसे कर पाऊंगी ये भी एक बड़ी चुनौती थी। क्योंकि 1-2 नहीं 7 संकलन की बात थी। इसी दौरान और भी कई समस्याएं आईं।

वैधानिक तौर पर जब काम सही और सटीक करने हो तो कुछ कठिन निर्णय लेने होते हैं, ऐसे में मनोज जी ने अंतरा छोड़ दिया । काम तब भी अकेले ही करने थे पर इस समय मानसिक तौर पर खुद को कमजोर महसूस किया। सब से ली सहयोग राशि मेरे लिए तब तक बोझ लगने लगी थी। लगातार पैरों की तकलीफ बढ़ती जा रही थी एक पल को ऐसा लगा मानों मुझे कुछ हो गया या मैंने अपने पैर ही खो दिए तब.....

नवम्बर में अंततः अर्पण ने अंतराशब्दशक्ति को सेन्स समूह में जगह दी, और साथ ही मजबूती से मेरे आत्मविश्वास को झकझोरा कि आप निराशा की कोई बात नही करोगी। अब मैं निश्चिंत होने लगी। पूरी हिम्मत से एक बार फिर संकलनों के काम में जुट गई । नवम्बर से जनवरी आ गई संकलनों को पुस्तक मेले तक आ जाना एक ख्वाब ही था जो पूरा हुआ। साथ ही 5 किताबें जिसमें मेरी किताब 'कतरा कतरा मेरा मन' और 'दृष्टिकोण' डॉ अर्पण की 'काव्यपथ' , आचार्य नवीन संकल्प जी की 'अव्यक्त प्रवाह' , मातृभाषा.कॉम और 4 महीने की वेब पत्रिका यानी कुल 16 किताबें 4 महीने में संपादित की।

अंतरा व्हाट्सअप को संभाला पिंकी जी ने। संचालक मंडल से विफल जी, देवेंद्र जी, कैलाश भैय्या, समकित, अर्पण और कीर्ति ने बहुत संबल दिया। मैंने पूरा श्रम किताबों, सम्मान संबंधित सामग्रियों में और डॉ. अर्पण ने आयोजन को उत्कृष्ट बनाने में लगा दिया।

नतीजा एक पारिवारिक परिवेश में, एक साहित्यिक आयोजन का सम्पन्न होना। सफलता की बात मैं नहीं करूंगी क्योंकि वो बात सभी स्वजनों के संस्मरण कह रहे हैं। खुशी से आत्मविभोर हूँ क्योंकि अंतराशब्दशक्ति मेरा परिवार बन गया है और उसका एक-एक सदस्य मेरे परिवार का हिस्सा है। उस परिवार का प्रेम हमेशा बना रहे हम हर कदम साथ चलकर हिन्दीग्राम और मातृभाषा उन्नयन संस्थान के माध्यम से हिन्दी के लिए साहित्यिक आहुतियां देते हुए एक महायज्ञ का हिस्सा बन कर हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए प्रतिबद्ध रहेंगे यही कामना करती हूं।

इन सभी कार्यों में समकित,अर्पण-शिखा, तन्मय-जयति-जैनम का यानि मेरे पूरे परिवार का जो सहयोग मुझे मिला है उसके लिए आभार बहुत छोटा शब्द है।

अर्पण के लिए एक बात 'हाँ! मेरी आँखों मे आज भी नींद नहीं है क्योंकि ये पहला पड़ाव था जो हिन्दी माँ के लिए हमनें साथ तय किया पर हमारी साझेदारी का लक्ष्य हमारा वो सपना है जिसके लिए पूरे देश में साथ-साथ काम करना है,...और वादा पैर कितने भी कमजोर हों हौसलों को कमजोर नहीं होने दूंगी'

-डॉ.प्रीति सुराना

सुनहरे पल

सुश्री राधा गोयल

इंदौर में अंतरा शब्द शक्ति की तरफ से साहित्यकारों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया था। मैं भी उसमें जाना चाहती थी किंतु कभी अकेली नहीं गई थी तो पतिदेव को बहुत चिंता थी। वैसे तो घर में हमारी नोकझोंक ही चलती रहती है। उन्हें कविता से रत्ती भर लगाव नहीं है और मुझे बहुत लगाव है जिसके लिए मुझे डाँट भी बहुत पड़ती है; किंतु उस दिन मेरी चिंता में उनका प्यार भी बड़ा नजर आया। मुझे भेजना नहीं चाहते थे, लेकिन दिखावा करने के लिए कंप्यूटर पर बैठ गए और दो घंटे तक कोशिश करने का दिखावा करते रहे।ट्रेन की टिकट वेटिंग में चल रही थी तो फ्लाइट की टिकट देखी। वहाँ अवेलेबल थी लेकिन लॉगइन पर जाकर अटक गये।जानबूझकर या सचमुच, नहीं मालूम। मैंने कहा कि तुम्हारी बेटी को फोन कर देती हूँ। वह सारी दास्तान मैंने कविता के रूप में पटल पर डाल दी।उसे पढ़कर कई युवा कलमकारों ने अपनी प्रतिक्रिया दी कि आप चिंता ना करें। हम आपको एयरपोर्ट से लेने,छोड़ने और ठहरने की व्यवस्था कर देंगे।वे सभी मैंने पतिदेव को दिखा दीं। फोन पर भी बात करवा दी, तब कहीं जाकर उनके दिल को थोड़ी सी तसल्ली हुई। उनको पता है यदि वह मुझे इजाजत नहीं देंगे तो मैं साइबर कैफे से अपनी टिकट करा कर चली जाऊँगी क्योंकि मुझे ऐसे आयोजनों में जाना, ऐतिहासिक स्थल देखना बहुत पसंद है।

कई युवा इतने ओजस्वी कलमकार हैं, जिनकी रचनाएँ समाज को एक नई दिशा दिखा रही हैं।जिन लोगों ने अपने आने की सूचना दी थी, वो पटल पर प्रेषित कर दी गई थी।उन सबसे मिलने की बहुत इच्छा थी।वहाँ गई, सभी से मिली। इतना अच्छा लगा कि मैं बता नहीं सकती। उस दृश्य का शब्दों में वर्णन करना तो बहुत ही मुश्किल है। आदरणीय वेद प्रताप वैदिक जी को साक्षात देखना व सुनना, पतंजलि योगपीठ के आचार्य, वरिष्ठ साहित्यकार, युवा व सभी उम्र के कर्मठ कवियों को देखना, महिला सशक्तिकरण की प्रतीक अपनी मित्रों से मिलना..... बड़े ही सुखद व अविस्मरणीय पल थे। कीर्ति ने अपनी आवाज में जो सुनाया, सुनकर मजा आ गया। इतनी सुंदर आवाज और लेखन भी इतना सुंदर। ऐसा बहुत कम देखने में आता है कि किसी का सुर भी सुंदर हो और लेखन भी भावपूर्ण हो। राशि की एंकरिंग बड़ी कमाल की थी। बार-बार लाइट जा रही थी; किंतु उसने लोगों को लाइट जाने का एहसास नहीं होने दिया। शब्दों का ऐसा जादू बिखेरा कि सब शांत होकर और मंत्रमुग्ध होकर प्रोग्राम का आनंद लेते रहे।आदरणीय वेद प्रताप वैदिक जी ने प्रेरक शब्दों में अभिभाषण दिया। हस्ताक्षर बदलो अभियान चलाने की प्रेरणा दी।

मेरे जैसी टूटी- फूटी जब अपना सम्मान ग्रहण करने के लिए मंच पर गई तो मंच पर चढ़ने में असमर्थ थी। वहाँ मंचासीन लोगों ने मंच पर चढ़ने व उतरने में सहायता की।पुस्तकों के स्टॉल से कुछ पुस्तकें खरीदीं।लंच के दौरान सभी से खूब गुफ्तगू हुई। उसके बाद कुछ महिला रचनाकार मंच पर फोटो खिंचवाने

पहुँची।हमारे वरिष्ठ व कनिष्ठ कलमकार भी लपककर आए।प्रीति जी प्रीत से अन्य कार्य में व्यस्त थीं और अर्पण जी भी इस साहित्यिक यज्ञ में पूर्ण रूप से अर्पित थे।

समारोह संपन्न होने के पश्चात मैं उसी कमरे में जाकर बैठ गई जिस कमरे में अर्पण जी व प्रीति जी थे। उसी में और भी कई साहित्यकार आकर बैठ गए।फिर तो जो महफिल जमी कि मजा आ गया। मेरे कमरे में सोमा श्रीवास्तव रुकी थी।उसने अपना मोबाइल खोला और एक लघु कथा सुनानी शुरू की। शब्द मसीहा जी बहुत हँसे। बोले कि 'यदि ये लघुकथा है तो कहानी किसे कहोगी?'

'चुप! ज्यादा मत बोलो। इसे लघुकथा ही कहते हैं।'

प्रीति के बेटे तन्मय ने भी कुछ सुनाया। बड़ा अच्छा लगा कि आजकल के बच्चों में एक नया उत्साह है कुछ करने की चाहत है।

मेरा वहाँ से आने का बिल्कुल मन नहीं था क्योंकि ऐसा मौका मुश्किल से मिलता है। परिवार की तरह सब एक कमरे में बैठकर अपनी अपनी रचनाएँ सुना और सुन रहे हैं।फ्लाईट का समय होने वाला था, इसलिए मन मारकर वहाँ से आना पड़ा। एयरपोर्ट पहुँच कर पता लगा कि फ्लाईट दो घंटे लेट है।बड़ी कोफ्त हुई कि यदि यह बात पहले पता लग जाती तो वहीं उस महफिल का कुछ और देर लुत्फ़ उठा पाती। उन लोगों ने कहा भी था कि अभी बहुत समय है। 9.20 की फ्लाइट है किन्तु दिल्ली के हिसाब से जिस तरह जाम मिलता है, उसे देखते हुए मुझे डर था कि फ्लाईट छूट न जाए। रास्ते में कोई जाम नहीं था। आधा घंटे में पहुँच गई थी।7.30 तक तो चैक इन भी करा चुकी थी। ढाई घण्टे मैंने उन्हीं *सुनहरी यादों* को याद करने में बिता दिये। रात को दो बजे घर पहुँची।

अगले दिन रविवार था।पोते पोती की छुट्टी थी।दिन भर वहाँ के किस्से सुनाती रही।पोते ने मेरी पीठ पर शाबाशी दी

'आई एम प्राऊड़ आफ यू दादी।ओह! माफ करो मेरी प्यारी दादी।गलती से अंग्रेजी में बोल दिया।मुझे अपनी प्यारी दादी पर बहुत नाज़ है।पहले एक किताब मैं मलक लूँ, वरना बचेगी नहीं।अपने स्कूल में अपने टीचर और दोस्तों को दिखाऊँगा।'

पुस्तक थामी।अपने कमरे में रखकर आया।फिर बड़ी तन्मयता के साथ सारी दास्तान बार- बार सुनी।

-राधा गोयल

संस्मरण–अंतरा शब्दशक्ति सम्मान 2018

हाँ! उन आँखो में नींद नहीं होती जिन आँखों में सपने होते है

16 नवंबर 2017 को दिन के लगभग 1 बजे मेरी साथी प्रीति जी ने अनायास बातचीत के दौरान शिकन भरा चेहरा और माथे की सिलवट के साथ इस बात की ओर इशारा कर रही थी कि 'मैने लोगो से संकलन के लिए कुछ पैसे लिए है, जो यक़ीनन मेरे मानस पर अब एक बोझ है क्योंकि मेरी शारीरिक अस्वस्थता मुझे आयोजन के लिए आगे नहीं होने दे रही, यदि मै दुनिया में ही नहीं रही तो...?'

बस यही शब्द मानस के भीतर हलचल कर गये, मैने वादा किया प्रीति जी, आप निश्चिंत हो जाओ, कही आपकी साख पर कोई दाग नहीं लगेगा, बस आप मेरी हिम्मत बने रहना।

और फिर प्रीति जी के शब्द 'अर्पण, मेरे पैर जवाब दे चुके है, मैं नहीं चल पाउंगी, तब मैने कहा यदि आपके पैर ही अर्पण बन जाए तो ....?

तब से लेकर 3 फ़रवरी की शाम 6 बजे तक का सुहाना सफ़र जारी रहा।

फिर शुरू कश्मीर यात्रा और कश्मीर में हमारा सम्मान होना था, जम्मू कश्मीर सरकार के साथ वादीस हिन्दी शिक्षा समिति ने हमारा सम्मान किया, उस यात्रा के दौरान भी प्रीति जी इसी बात से चिंतित कि संकलन कैसे निकलेगा? और पता नहीं सम्मान समारोह हो पाएगा या फिर नहीं। मेरी और प्रीति जी की लड़ाई भी हुई क्योंकि मुझे निराशा पसंद नहीं, मैं नकारात्मक बातों से भी चिड़-सा जाता हूँ। *हाँ मैं और प्रीति जी बहुत लड़ाई भी करते है, पर दावा है कोई हमारी तरह लड़कर फिर एक होकर दिखाए। हमारी लड़ाई बहुत गहरी, गंभीर और ख़तरनाक होती है परंतु बिल्कुल पानी के बुलबुले के तरह जिसने कभी हमारे रिश्तों को प्रभावित नहीं होने दिया।*

कश्मीर यात्रा से लौट कर आना और फिर प्रीति जी का एक कर्मयोगिनी की तरह पुस्तकों के लिए जुट-सा जाना। जिस स्त्री का स्वास्थ्य उसका साथ देना नहीं चाह रहा हो, फिर भी रात के चौथे पहर तक सतत साधक की तरह संकलन को संजोने में जुटे रहना। केबीएस प्रकाशन की भावना शर्मा जी के साथ एक फ़ोन पर चर्चा भी करना, पुस्तकों की कमीबेशी दूर करना, दूसरे फोन पर कभी-कभार मुझे लेकर चर्चा करना।

हाँ! उन आँखो में नींद नहीं होती जिन आँखों में सपने होते है..

येन-केन-प्रकारेण पुस्तकों को संयोजित कर दिल्ली के पुस्तक मेले तक तैयार करवाकर सपनों को जागती आँखों से देखना अद्भुत होता है।

इसी के साथ आयोजन की तैयारी में जुटना, पहले आयोजन 21 जनवरी को होना था, क्योंकि 22 जनवरी को प्रीति जी जन्मदिन था, परंतु आतिथ्य उपलब्धता सहज न हो पाने के कारण आयोजन का दिन हमने 3 फ़रवरी तय किया।

उस दौरान डॉ. वेद प्रताप वैदिक जी का इंदौर प्रवास था, मुझसे प्रीति जी ने कहा कि आप अनुरोध करो शायद वैदिक जी की स्वीकृति मिल जाए। नीयत नेक तो मंज़िल आसान , मैं वैदिक जी से अनुरोध करने चला गया , और वैदिक जी ने भावुकता के साथ सहज स्वीकृति देते हुए कहा कि हिन्दी के लिए तुम दोनो के योगदान को में नमन करता हूँ, और यदि तुम आयोजन कर रहे हो तो मैं मना नहीं कर सकता, मै ज़रूर शामिल रहूँगा।

फिर वैदिक जी की स्वीकृति के बाद राष्ट्रीय कवि सत्यनारायण सत्तन जी और प्रभु जोशी जी की स्वीकृति मिल गई (स्वास्थ्यगत समस्याओं के चलते वे दोनो आयोजन में नहीं आ पाए) फिर स्टेट प्रेस क्लब के अध्यक्ष कप्तान प्रवीण खारीवाल जी की स्वीकृति मिली साथ ही फिर आयोजन स्थल जो पहले प्रीतमलाल दुआ सभाग्रह तय था उसे बदला और होटल साउथ एवेन्यू में हुआ। पतंजलि योगप्रचारक प्रकल्प हरिद्वार के प्रमुख आदरणीय नवीन जी से सहज आग्रह और उनकी स्वीकृति हमारी लिए उत्तम रही।

इसी बीच मेरे मानस में हिन्दी माँ का चित्र उभरना और प्रीति जी के समर्पण से मानस में उभरी छवि को आदरणीय माणिक जी चित्रिव जी से वो आकृति बनवाना और खुद ही हिन्दी माँ की वंदना लिखना, मेरे लिए तो गौरवपूर्ण क्षण ही रहा। फिर इंदौर पुलिस उपमहानिरीक्षक आदरणीय हरिनारायणचारी जी का भी आयोजन में शामिल होना तय हुआ। उसके बाद देशभर के लगभग 100 से अधिक साहित्यकारों का माँ अहिल्या की नगरी में आने की स्वीकृति मिलना हमारे लिए गौरव का क्षण रहा।

इसी बीच प्रीति जी 1 फ़रवरी को इंदौर आना और हमारा युद्धस्तर पर जुट जाना, क्योंकि प्रीति जी प्रेरणा ही नहीं बल्कि हिम्मत है हमारी।

आगंतुकों का इंदौर पहुँचना फिर दिल्ली से साथियों का इंदौर आना, व मालवी आतिथ्य संस्कार से कैलाश जी व दल का समर्पण निश्चित तौर पर नमन योग्य है। आयोजन की तैयारी युद्धस्तर पर चल रही थी, सभी अपना अपना योगदान दे रहे थे, और शाम तक हम तनाव में थे कि कैसे आयोजन होगा, कही कोई कमी ना रह जाए, क्या होगा , और ना जाने तरह तरह के सवाल मानस में उभर रहे थे, और तनाव अधिक भी हो रहा था। फिर भी सभी साथियों के सहयोग से आयोजन का दिन आ गया। और सुबह 8.30 पर पता चलना कि सत्तन जी का स्वास्थ्य ठीक नहीं है,वो नहीं आरहे है। मेरे सामने आयोजन के अध्यक्ष कौन होंगे एक संकट शुरू हो गया? महज 10 मिनट में माँ सरस्वती और हिन्दी माँ की कृपा से वरिष्ट साहित्यकार आदरणीय हरेराम वाजपेयी जी की स्वीकृति आ जाना,चमत्कार से कम नहीं।

सभी व्यवस्थाओं के सुचारुता इस बात की सूचक रही कि सभी योद्धा अपनी ज़िम्मेदारियों का ईमानदारी से निर्वाह कर रहे थे, यही कारण आयोजन सफल भी रहा। अन्यथा असफलता तो पहले से ही स्वागत करने को आतुर थी, क्योंकि आपकी एक चूक और समस्या शुरू। हम भी एक बीमारी से जूझ रहे थे, सबसे बड़ा रोग 'क्या कहेंगे लोग'। पर माँ भगवती और हिन्दी माँ ने जिस शक्ति का संचार किया वो निश्चित तौर पर हमें कार्य करने के लिए आगे बढा रही थी। विघ्नों के बावजूद उपसर्गों पर पार पाते हुए हमने 11.45 मिनट पर आयोजन की औपचारिक शुरूवात कर ही दी। सरस्वती वंदना और सुंदर घनाक्षरी आदरणीय कीर्ति दीदी ने समा बाँध दिया, संचालन राशि पटेरिया जी ने करके अभिभूत किया।

हरदा से साथी जयकृष्ण चांडक जी द्वारा पेंसिल से मेरा चित्र बनाना और भेंट करना भी खुश कर गया। हाँ इन्ही सब खुशियों को सहेजकर उसे ताक़त बना ली। इटारसी से पधारे आदरणीय देवेन्द्र सोनी जी से मिलना , पिंकी जी, कीर्ति दीदी से, वसुंधरा जी, आदि से मिलना भी खुश कर गया। साहित्य सृजन की शक्तियों का सम्मान कर हम अभिभूत है। लगा तो एसा जैसे खुशियों की रेलगाड़ी इंदौर जंक्शन पा आ गई और

उसमे हम बैठ कर आगामी सफ़र तय करेंगे। तीन की शाम को सबका मिल कर एक हो जाना और फिर परिवार बन कर कार्य करना निश्चित तौर पर मुझे एक परिवार दे गया। हाँ, ऐसा लग रहा था मानो बिटियाँ के विवाह से निवृत्त हुए हो। गुलशन में खिला प्रेम जिसने मुकेश भैय्या, केदार भैय्या, कैलाश दादा, जैसे बड़े भाई दिए और सभी साथियों के स्नेह ने हमे हिम्मत दी।

हम हृदयतल से आदरणीय वेदप्रताप वैदिक जी, हरेराम वाजपेयी जी , नवीन संकल्प जी एवं प्रवीण खारीवाल जी के आभारी है, जिनका आतिथ्य हमें मिला। हम आभारी है मातृभाषा उन्नयन संस्थान, स्टेट प्रेस क्लब व चुमन्स प्रेस क्लब, केबीएस प्रकाशन के।

हम आभारी है हिन्दी सेवियों के जो प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रुप से सभी साथियों के जैसे कैलाश सिंघल जी, मुकेशजी-सपना दुबे, शब्दमसीहा, गुलशन प्रेम, सोमा विश्वास, शिरीन भावसार जी, शिखा,तन्मय सुराना, भाई रोहित त्रिवेदी, कमल कुमार जैन, मृदुल जोशी जी, भीम मेंदड़, विनोद जैन भाई, समकित सुराना जी, संजय कोचर जी, कीर्ति वर्मा जी, पिंकी परुथी जी, गुलाब-लीला देशलहरा जी,अदिती रुसिया जी, संजय साफी जी, अनिल चिंतित जी, गफ्फार खान जी, जयकृष्ण चाण्डक जी, हेमंत बोर्डिया जी, शीतल खण्डेलवाल जी एवं सभी सहयोगियों के।

साथ ही सच यह भी है कि परोक्ष-अपरोक्ष रुप से हमसे कई गलतियाँ भी हुई होगी, परन्तु आप उदारमना होकर हमें क्षमा करें । कहीं कुछ त्रुटि रही हो तो जरुर बताएं ताकि आगामी आयोजनों में उन्हें सुधारा जा सके।

डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'
हिन्दीग्राम, इंदौर

यादों की गठरी

जैसे मुझे पता लगा कि ये सम्मान समारोह इंदौर में आयोजित हो रहा है ,मेरी तो खुशी का ठिकाना न रहा..जीवन का पहला अनुभव..सच बताऊँ तो मुझे न पारूप पता था न सम्मान का कि इस तरह से होगा

ओह्ह..अद्भुत अनुभव रहा..शुक्रवार को सब से पहले तो आदरणीया राधा जी का दिन का भोजन और चाय मेरी पत्नी और मेरे साथ घर पर रहा और अच्छी वार्तालाप से उसका समापन रहा..तदपश्चात फिर जुट गए शाम की गोष्टी में..

मेरी पत्नी कथिक चिंतित थी कि क्या खाना बनाएं..आगन्तुकों की पसंद अनुसार होगा कि नहीं..मेने काफी प्रयास किया कि सभी गुणीजन बहुत सौम्य सरल और अनोपचारिक है..फिर भी स्वभाव अनुसार थोड़ी सी चिंता..

और आखिर मेरे लिए वो अविस्मरणीय पल आ ही गया और एक शानदार जानदार गोष्टी का आयोजन आदरणीय कैलाश जी के नेतृत्व में हुआ जिसके साक्षी मेरा पूरा परिवार और मेरा ससुराल परिवार रहा..इस गोष्टी में 4 8 16 32 चाँद लगा दिए आदरणीय चांडक जी, प्रिय बोर्डिया जी और आदरणीया सुनीता जो..ओह्ह कितना सुखद पल था मेरे लिए..एक अलग ही गौरव महसूस हो रहा था..प्रिय बोर्डिया जी ने मुझ पर लिखी रचना तरन्नुम में पढ़ मुझे ही क्या मेरे पूरे परिवार को गौरान्वित और विस्मित कर दिया..फिर दौर चला और चलता रहा..आदरणीया सुनीता जी को सुनना सुखद रहा..चांडक जी ने तो समां बाँध दिया..फिर मोर्चा संभाला बिग बॉस ने..और जो समय को पकड़ा की जब उनके सम्मोहन से बाहर आये तो पता चला कि रात की लगभग 1 बजने वाली है..धन्य हो दादा..परिवार का हर सदस्य आप का मुरीद हो गया..

फिर मेने सब को होटल और चांडक जी को उनकी बहन के घर छोड़ा और घर आ कर सो गया..झूट..सही बताऊँ तो नींद नही आई..इंतजार था अगले दिन का..

ओह्ह ओह्ह वो दिन आ ही गया जिसका इंतजार था..सच में बेसब्री से इंतजार..में जल्दी से जल्दी कर के भी आदत मुताबिक थोड़ा लेट ही पहुँचा..जैसे ही मेने हाल में प्रवेश किया..ओह्ह भव्य माहौल था..खचाखच भरा हाल..और अनजाने से जाने पहचाने चहरे..मेरे बगल में बोर्डिया जी..

अरे देखो ये तो मेघा है ना..नही नही..हाँ हाँ..अरे ये रही रागिनी जी..ओह्ह ये है क्या..अरे ये तो गणतंत्र जी है..ये तो शून्य जी लग रहे है..ये तो वो लग रहे है..एक अजीब सा मीठा अहसास..फिर आया मेरा नाम..शीतल खंडेलवाल..ओह्ह मन नाच उठा..और खुद को संभाल कर और कोशिश कर चेहरे पर गंभीरता ला के स्टेज पर आया..बोर्डिया जी को पहले ही फोटो लेने का बोल दिया था..बस डटे रहे और खुद को गौरान्वित महसूस कर रहे थे..तभी वीडियो वाले भैया ने थम्स अप किया तो लगा कि मन ही मन बोल रहे हो भैया उतर जाओ जो गया आप का..अब अगले का नंबर भी आने दो जरा...

फिर शुरू हुआ मुलाकातों का दौर..वहाँ आदरणीया शिरीन जी रागिनी जी, रमा जी, राशि जी, सुनीता जी, राधा जी, निजामाबाद वाले आचार्य जी, लीलानी जी, वसुंधरा जी, आदरणीय अर्पण जी, पुरोहित जी, गणतंत्र जी और भी कई गुणी हस्तियों से मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ..

ऐसी बीच मिल गयी हम सब की प्रीति जी..जिस अपनेपन से और अधिकार से उन्होंने नाराजगी जताई और कहा कि अगली बार नाश्ता दिन और रात्रि खाना आप के ही घर रहेगा..सच मानिए इतना इतना इतना अच्छा लगा कि में बता नहीं सकता.. कब मुलाकातों का दौर खत्म हुआ और शाम हो गयी पता भी न चला..फिर शुरू हुआ पारिवारिक रुप और दोस्तों के बीच सम्मान शेयर करने का..जो रात तक बधाइयाँ चलती रही..और उन मीठी यादो को बधाइयों में लपेटकर सो गए और सपने में भी अंतरा चलता रहा..निसंदेह एक अविस्मरणीय दिन मेरी जिंदगी का

-शीतल खंडेलवाल

मातृभाषा.कॉम सहित आचार्य नवीन संकल्प की पुस्तक अव्यक्त प्रवाह का विमोचन हुआ।

इंदौर में अंतरा शब्दशक्ति एवं भाषा सारथी सम्मान आयोजन

दिल्ली के विश्व पुस्तक मेले में मिलना हुआ बहिन डा. प्रीति सुराना जी और डा. अर्पण जैन 'अविचल' जी से। मौका था उनकी हालिया प्रकाशित पुस्तक 'दृष्टिकोण' के विमोचन का. तीन दिन हम लोग साथ रहे विश्व पुस्तक मेले में और बहुत सी बातें हुईं. इसी दौरान उन्होंने इंदौर के भव्य पुस्तक लोकार्पण में आने का न्योता दिया . जिसे हमने सहर्ष स्वीकार कर लिया

इसके बाद सिलसिला शुरू हुआ फोन पर बातों का और कैसे जाना है इस बात का . एक तारीख को सभी के जाने के टिकिट और चार तारीख वापसी के टिकिट बुक हो गए . डा. पूरन सिंह जी, सोमा बिश्वास जी, संजय साड़ी जी , भावना शर्मा जी और मेरा अर्थात शब्द मसीहा का जाना तय हो गया . इधर भाई मुकेश दुबे जी और हमारी भाभी महाकाल आ रहे थे. भाई गुलशन प्रेम जी और भाई ऋषि अग्रवाल जी भी हमें इंटरसिटी एक्सप्रेस में मिलने वाले थे .

हम तीन लोग चढ़े सराय रोहिल्ला स्टेशन से और मेरे साथ सोमा बिश्वास ने ट्रेन को पकड़ा हजरत निजामुद्दीन से . सभी लोग मस्ती करते हुए कोटा पहुँचे सुबह करीब साढ़े पाँच बजे . ऋषि अग्रवाल और गुलशन भाई जी भी हमारे साथ शामिल हो गए और हम पहुँच गए उज्जैन . गाडी से उतर कर ऑटो लिया. उसने हमसे साठ रुपये लिए और वहाँ पहुँचकर मैं और गुलशन भाई सैलून में घुस गए दाढ़ी बनवाने के लिए. इसके बाद हमने कपडे बदले. इसी दौरान ऋषि अग्रवाल के दोस्त दुबे जी भी आ गए. फोन पर बात हुई हमारी और मुकेश दुबे भाई भी भाभी सहित कार से महाकाल पहुँच गए. हम सभी ने बाबा महाकाल के दर्शन किये. इस बीच बहिन प्रीति सुराना से हम लगातार फोन से संपर्क में थे और उनसे मिलने की उत्सुकता भी अपने चरम पर थी. डा. पूरन सिंह संजय साड़ी और भावना के साथ सोमा बिश्वास इंदौर पहुँच गए थे. हमने महाकाल के अन्न क्षेत्र में भोजन किया और कुछ खरीददारी की . उसके बाद हम सवार हो गए अपनी गाडी में . ऋषि अग्रवाल भाई और दुबे भाई सवार हुए मोटर साइकिल पर. यहाँ से इंदौर की दूरी लगभग सैंतालीस किलोमीटर है. करीब दो बजे हम सभी अपने तुकोगंज के होटल में पहुँच गए जहाँ प्रीति बहिन और अर्पण जी, मुकेश भाई व भाभी जी से और अर्पण जी धर्मपत्नी शिखा जी से मुलाकात हुई. सभी लोग कमरे में आगंतुकों को दिए जाने वाले सम्मानपत्र और किताबें उनके थैलों में लगा रहे थे ताकि कोई अव्यवस्था न हो.

डा. पूरन सिंह और सोमा बिश्वास जी अपने-अपने कमरे में तैयार हो चुके थे. हमें डा. भीमराव आंबेडकर जी के जन्म स्थान महू जाना था. इसलिए हम मुकेश भाई सहित सभी से आज्ञा लेकर निकलने लगे. तभी मुकेश भाई जी ने अपनी गाडी की चाबियाँ गुलशन प्रेम जी के हवाले कर दीं और वो बन गए हमारे ड्राइवर . हम सभी निकल पड़े अपने गंतव्य की ओर. लगभग एक घंटे में हम खाते पीते और बातें करते भीम जन्म स्थली पहुँच गए. यहाँ हमने बहुत सारे चित्र लिए और उनके अस्थि कलश के दर्शन किये . कुछ किताबें खरीदीं और जानकारियाँ लीं. रस्ते में हमने गोलगप्पों का आनंद लिया. लगभग सात बजे हम पुनः होटल वापिस आ गए.

हमारे पास कुछ करने को नहीं था. कुछ और भी

आगंतुक होटल में पहुँच चुके थे. सबसे मिलना मिलाना हुआ और फिर पहुँच गए मुकेश दुबे भाई के कमरे में. समय बहुत था अभी अतः कुछ जानकारियाँ अर्पण जी से लीं और चले गए इंदौर के मशहूर फूड स्ट्रीट रजवाड़ा में. मसाला डोसा , लस्सी, गोलगप्पे , खाना, भुट्टे का कीस और पान का आनंद लिया. वापसी में लगभग साढ़े बारह बज चुके थे . फिर सभी प्रीति बहिन के कमरे में पहुँच गए . वहाँ से अपनी मस्ती को लाइव किया आप सभी के लिए. करीब डेढ़ बजे हम अपने-अपने कमरे में चले गए . तय हुआ कि सुबह आठ बजे तक सभी तैयार हो जायेंगे.

डा. अर्पण जैन 'अविचल' लगातार रात में भी और सुबह भी भागदौड़ में लगे हुए थे. हम नीचे आ गए और फिर जुट गए अपने-अपने काम में. पहले हमने बैनर लगाए हाल के अन्दर फिर किताबों का स्टाल और सभी सम्मान पत्रों और स्मृति चिन्हों को और उनके साथ दी जाने वाली किताबों को तरीके से लगाया. इस काम को करते हुए ग्यारह बज गए थे हाल में बहुत सारे लोग आ चुके थे और खचाखच भर चुका था . अब इंतजार था तो डा. वेद प्रकाश वैदिक जी का. वे भी लगभग साढ़े ग्यारह बजे आ गए और कार्यक्रम की शुरुआत **अंतरा शब्दशक्ति** और **हिंदी ग्राम** के मंतव्य को जाहिर करते हुए स्वागत भाषण में डा. अर्पण जैन 'अविचल' जी ने की . सभी अतिथियों का स्वागत और माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण व स्तुति का क्रम हुआ. इसके बाद वैदिक जी ने अपना उद्बोधन दिया.

यह कार्यक्रम तीन फरवरी 2018 को इंदौर के तुकोगंज के होटल साउथ एवेन्यू में अन्तरा शब्दशक्ति एवं भाषा सारथी के सौजन्य से हुआ. इस कार्यक्रम में देश के 120 से अधिक साहित्यकारों को सम्मानित किया गया. यह कार्यक्रम हिंदी को बढ़ावा और जन भाषा बनाने की मुहीम को लक्ष्य कर आयोजित किया गया था. श्री वेद प्रताप वैदिक जी ने इस विषय पर अपना ओजपूर्ण वक्तव्य रखा. हिंदी को देश भाषा बनाने के लिए हिन्दीग्राम और मातृभाषा उन्नयन संस्थान इस कार्य में अपनी अग्रणी भूमिका निभा रहा है.

मुख्य अतिथि के रूप में डा. वेद प्रताप वैदिक जी, अध्यक्ष के रूप में वरिष्ठ साहित्यकार श्री हरेराम वाजपेयी जी, अतिविशिष्ट अतिथि के रूप में स्टेट प्रेस क्लब के अध्यक्ष श्री प्रवीण कुमार खारीवाल जी व् पातंजलि योग पीठ से पधारे आचार्य श्री नवीन संकल्प जी थे. इस आयोजन में मकरंद, अपूर्वा, गुंजन, कथासेतु, अनुबंध,स्पंदन, मातृभाषा.कॉम सहित आचार्य श्री नवीन संकल्प जी की पुस्तक का विमोचन हुआ.

पूरा सभागार साहित्य साधकों से खचाखच भरा हुआ था . देश के चौबीस राज्यों से एक सौ बीस से अधिक साहित्य साधकों को यहाँ संस्था द्वारा सम्मानित भी किया गया.

इस कार्यक्रम की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में माँ हिंदी के चित्र का निर्माण और लोकार्पण एक उल्लेखनीय उपलब्धि है .

कार्यक्रम बहुत ही भव्य था. सभी लोगों के चित्र और सांझा चित्र हुए. बहिन प्रीति सुराना जी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया. इसके बाद प्रीति भोज का शुभारम्भ हुआ. सभी लोग एक-दूसरे से मिल रहे थे. हमने भी मुकेश दुबे भाई जी की प्लेट में ही खाना लिया. सभी लोग जब पेट पूजा से निवृत्त हो गए तब हम सामान समेटने लग गए. वापिस कमरे में पहुँच कवितायें, गीत, कहानियाँ फिर शुरू हो चुका था.

वाकई, अपने आप में किसी भी कार्यक्रम को सफल बनाने के पीछे कितनी मेहनत होती है इस बात को मैंने उस दिन जाना..... जब अर्पण और प्रीति के चेहरों पर मैंने चमक देखी. व्यवस्था और सभी की देखभाल, आवभगत करते वह बुरी तरह थक चुकीं थीं . नहीं आ सकने वाले बाकी लोगों के सम्मान और

किताबें फिर इकट्ठा कर कमरे में लायी गयीं और तय हुआ कि अर्पण जी, प्रीति बहिन, शिखा जी सभी को कूरियर करेंगे. इस कार्यक्रम में समकित जी और शिखा जी , तनु (तन्मय) और प्रीति बहिन और अर्पण जी के समस्त परिवार का सहयोग बहुत महत्वपूर्ण रहा

मुकेश भाई जी तीन तारीख को ही वापिस हो गए थे. इस दौरान हमने बहुत से चित्र भी लिए. सभी मित्रों से मिलना, नए दोस्त बनाना ...वाकई एक अलग दुनिया है यह साहित्यकारों की . हमने भी एक अनोखा अनुभव लिया जीवन का. हमारी ट्रेन रविवार की थी चार बजे की. अतः तय हुआ कि हम इंदौर की कुछ और जगह देखेंगे. सुबह हम खजराना मंदिर चले गए . वहां करीब दो घंटे का समय बिताया . मेरे साथ डा. पूरन सिंह जी और सोमा जी थीं . वहीँ हमने खाना भी लिया. उसके बाद हम काली मंदिर चले गए. वहाँ हमने दर्शन किये और कुछ देर विश्राम के बाद लौट पड़े अपने होटल की ओर . दोपहर तीन बजे निकलने का तय हुआ था . किसी का भी मन नहीं कर रहा था कि इस मंजर को छोड़ा जाय मगर सबकी मजबूरियाँ थीं . सभी से विदा ली. बहिन प्रीति से भरी आँखों से दूर चला आया . बहुत भावुक पल थे वे.

रेलवे स्टेशन पहुँच गाडी में सवार हुए और लौट पड़े दिल्ली की ओर स्मृतियाँ समेटे और सभी के प्यार, सम्मान और अपनत्व को सहेजे . भाई गुलशन प्रेम जी ने सबको उस समय चौंका दिया जब उन्होंने बताया कि वे रास्ते में अपनी बहिन के यहाँ उतर गए हैं और फिर से मिलने आ रहे हैं हम सभी के लिए खाना लेकर भाई मुकेश दुबे, भाभी जी, अर्पण जी, ऋषि अग्रवाल जी, गुलशन प्रेम जी , शिखा जी , कमल जी और अनेक दोस्तों के चेहरे अब भी आँखों के सामने हैं मेरे. ईश्वर ने चाहा तो फिर मिलेंगे इसी उम्मीद के साथ इंतजार जारी है .

-शब्द मसीहा

मधुर स्मृतियां

समझ नहीं आता कहां से आरंभ करूं....

दुष्यंत कुमार जी की पंक्तियां याद आती हैं *कौन कहता है आसमान में छेद नहीं हो सकता एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारो÷*

बस पढ़ कर तो लगता है, यह सिर्फ कहने सुनने की बातें हैं पर मैंने अपनी आंखों से देखा है !

इसको चरितार्थ किया मेरी प्रिय सखी प्रीति सुराना ने,जब उनके दिमाग में अंतरा शब्द शक्ति सम्मान योजना जन्म ले रही थी तभी कुछ बुरे ग्रह नक्षत्रों ने उनकी कुंडली पर बुरी दृष्टि डाली !!!

वे गंभीर बीमारी से ग्रस्त हो गई, जब मैंने फोन पर बात की तब उनकी आवाज ही नहीं निकल रही थी। आवाज सुनकर आप विश्वास नहीं करेंगे!! मेरी आंखों से आंसू की धारा बहने लगी।

अपने मनोभावों पर नियंत्रण नहीं रख पाई।

वर्मा जी ने मुझे सम्हाला

उस समय भी प्रीति ने बहुत हिम्मत की बात करी।

जो मेरे दिल दिमाग में आज तक अंकित है।

मेरे जाने के बाद तुम लोग मुझे याद तो करोगे।

कलेजा कांप जाता है!!! याद करके

जनवरी तक किसी भी कीमत पर यह कार्यक्रम करना चाहती हूं ।

बस बीमारी की तरफ मुड़ कर भी नहीं देखा। और चल पड़ीं

एक बड़े मिशन पर समग्र भाव लेकर साहित्यकारों को स्थापित करने और उनकी भावनाओं को अमर बनाने।

अनेक चढ़ाव उतार

कोई रुठा कोई जुड़ा.... पर लगी रही अपने मिशन पर और फिर एक देवदूत ने उनका हाथ थामा। और चल पड़े दोनों हिन्दी माता की सेवा में जो **शब्द शक्ति सम्मान** एवं **भारती सम्मान** 1918 आपके समक्ष था ।

अत्यंत भव्य एवं सफल आयोजन उनकी मेहनत और लगन का ही प्रतिफल था।

मैं सौभाग्यशाली हूं जो परमात्मा ने मुझ उनसे मिलाया।

मुझे उनसे प्रेरणा मिलती है।यह सम्मान मेरा नही बल्कि इन दोनों हिन्दी सेवियों का है।

वे सदैव स्वस्थ रहें और दोनों हिन्दी दूत इसी तरह अपने लक्ष्य को प्राप्त करें।

इसी मंगल कामना के साथ

-कीर्ति प्रदीप वर्मा

संस्मरण

जीवन में अविस्मरणीय क्षण का आगमन हुआ माँ महाविद्या की अनुकंपा एवं आप सभी स्वजनों के शुभाशीष से,

मुझ अकिंचन को साहित्य जगत की सुप्रसिद्ध संस्था मातृभाषा उन्नयन संस्थान एवं हिन्दी ग्राम की ओर से अखिल भारतीय अंतरा शब्द शक्ति सम्मान से सम्मानित किया गया,तथा मेरी

गजल का साझा संग्रह 'गुंजन' का भी विमोचन हुआ.....

मेरी यह उपलब्धि माता पिता एवं मेरे अर्धांग को समर्पित,

आप सभी के आशीष की अभिलाषी .....

-मेघा योगी

कुछ पल खुशियों के चुरा भेजे

दर्द चाहे चल रहा हो भीतर

अपनो ने मुस्कराना सिखाया मुझे

दिली आभार डॉ. प्रीति सुराना व डॉ अर्पण जैन जी व उनकी पूरी टीम अंतरा शब्दशक्ति मातृभाषा उन्यन संस्थान का जिन्होंने मुझे इस काबिल समझा मुझे यह मान सम्मान दिया

अपनी परेशानियों के चलते मैं स्वयं इस सफल आयोजन जो इंदौर में 3/02/2018 में सम्पन्न हुआ हिस्सा लेने तो न जा सका

मगर आज मेरे बड़े भाई शब्द मसीहा केदार नाथ जी द्वारा मिला यह अनमोल उपहार

अनुबंध सांझा काव्य संग्रह में एक स्थान मेरा भी है कुछ रचानाओं को लिए जिसे आप अपनी राय से जरूर अवगत कराये।

-पवन अरोरा

मन के कोरे पृष्ठों पर.....

अंतरा शब्दशक्ति सम्मान 2018

सोच रही हूँ कहाँ से शुरू करूँ, कैसे करूँ? याद आ रहा है वो दिन.... जब प्रीति जी ने अंतरा के व्हाट्सप समूह में साझा संग्रहों के प्रकाशन की और सम्मान योजना से संबंधित पोस्ट डाली थी। उसी दिन से उत्साह मन में हिलोरें लेने लगा था। तीन संग्रहों में शामिल होने के लिए रचनाओं का चुनाव, उन्हें भेजना और भेजने के बाद दिन-दिन इस योजना की प्रगति से अवगत होते जाना.... बहुत अच्छा लगता था।

फिर कार्यक्रम की तिथि 3 फरवरी घोषित हुई तो जैसे प्रसन्नता का ठिकाना न रहा।मन का परिंदा तो कल्पनाओं में नित इंदौर की यात्रा करने लगा था। अपने कई कार्यक्रम स्थगित करके मैंने उत्साहित होकर इंदौर जाना अपने लिए निश्चित किया था। समूह के आभासी मित्रों से प्रत्यक्ष मिलने की ललक थी, अंतरा के इस जितना साहित्यिक उससे कहीं अधिक पारिवारिक कार्यक्रम में अंतरा परिवार के सदस्य के रूप में शामिल होने का मोह था, तो इसी के चलते बेटे से टिकट भी निश्चित करवा लिए थे। मैं तो उत्साह में उड़ी- उड़ी जा रही थी कि बेटे ने लगभग दस-बारह दिन पहले मुझे सूचित किया कि उसके ऑफ़सि के उद्घाटन की पूजा, जो 24 जनवरी को होने वाली थी, बदल कर 3 फरवरी हो गई है। सुनते ही प्रसन्न होना स्वाभाविक था, क्योंकि बेटे की पहली सफलता, उसके ऑफ़सि का उद्घाटन और पूजा जो थी, जो किसी भी माता-पिता के लिए गर्व का विषय होती है। एक ओर बेटे की खुशी, दूसरी ओर इंदौर में अंतरा शब्दशक्ति सम्मान 2018 के कार्यक्रम में शामिल होने की खुशी.... दोनों मेरे लिए महत्वपूर्ण। अंत में जीत माँ के प्यार की हुई और मैंने अपना जाना स्थगित कर दिया। बेटे की सफलता की खुशी एक माँ के लिए अपनी खुशियों से ज़्यादा महत्वपूर्ण होती है। तब प्रीति जी को मैंने कार्यक्रम में अपने न आने के बारे में सूचित किया।

समूह में जाने वालों की पोस्ट पढ़ती थी तो यही सोचती रहती रहती थी कि इतने अच्छे और इतिहास रचने वाले कार्यक्रम से मैं अपनी विवशता के चलते वंचित हो रही हूँ।

3 फरवरी का दिन...... एक बजे तक तो बेटे के ऑफ़सि की पूजा में व्यस्त रही। उसके बाद रह-रह कर अंतरा समूह की पोस्ट देखती थी। जब मित्रों ने कार्यक्रम के फ़ोटो डालने आरंभ किए तो देख कर मन को कुछ चैन आया। लगा कि तस्वीरों के माध्यम से ही सही, कार्यक्रम में शामिल होने की अनुभूति सी तो हो रही रही हैं। शरीर से तो नहीं, पर मन से तो पूरे कार्यक्रम को जिया मैंने।

आज कार्यक्रम में शामिल हुए मित्रों के संस्मरण पढ़ कर कार्यक्रम को जीने का जो आनंद मित्रों ने प्रदान किया, उसके लिए आभार कहना उनके किए को कम करना होगा।

कर्मठता की मिसाल प्रीति जी स्वास्थ्य को लगभग दरकिनार करते हुए जिस श्रम और मनोयोग से इस पूरे आयोजन को करने में लगी रही और उनके बाएँ हाथ बन कर डा. अर्पण जैन अविचल जी ने क़दम मिला कर गति दी...... इसके लिए लिखने को शब्द भी काम होंगे।

अंतरा परिवार के इस साहित्यिक-पारिवारिक सम्मान समारोह में घराती और बाराती.... दोनों में से किसी भी रूप में शामिल न हो पाने की कसक तो अपनी जगह रहेगी ही, पर जल्दी ही अंतरा के किसी अन्य कार्यक्रम में शामिल होने का अवसर मिलेगा और घर तथा स्वास्थ्य की परिस्थितियाँ मुझे पुनः विवश नहीं करेंगी...ऐसी आशा मन में लिए अंतरा के अन्य कार्यक्रम में समूह के सभी साथियों से मिलने की इच्छा को जीती रहूँगी।

प्रीति जी, अर्पण जी, अंतरा की पूरी टीम और सम्मान पाने वाले सम्मानित रचनाकारों को इस ऐतिहासिक कार्यक्रम के लिए कोटि-कोटि बधाई।

-डा. भारती वर्मा बौड़ाई

हिन्दी माँ की वंदना

(तर्ज-इक्षुरस से किया पारणा)

सिंधु में जितना भी है जल ,
हिन्दी में उतना ज्ञान
जय जय हिन्दी माता महान
जय जय हिंदी माता महान

ऐसी है हिंदी की माया
शब्द शब्द में ब्रम्ह समाया
बीज मंत्र से लेकर देखो
सृष्टि का हर वर्ण बनाया
सुर से लेकर स्वर तक जिसने
पाया है वरदान
जय जय हिंदी माता महान

शुभ्रा के वीणा की धुन
चपला सी चंचलता के गुण
माता सती सी सहनशीलता
भारत माँ जैसी है करुण
हर एक बोली को अपनाया
जो है गुणों की खान
जय जय हिंदी माता महान

दवात,लेखनी, पत्र को धारे
अस्त्र शस्त्र हैं अक्षर सारे
रचती कितनी वेद ऋचाएं
संपदा जिसकी सभी विधाएं
प्रीति साधे जो सकल संस्कृति
साधन और संधान
जय जय हिन्दी माता महान।।

डॉ.प्रीति सुराना

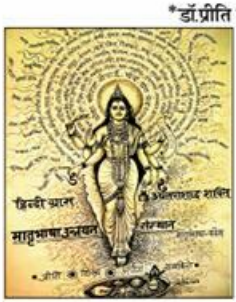

अंतरा शब्द शक्ति सम्मान, सन 2018

अंतरा शब्द शक्ति सम्मान सन् 2018 की तारीख की घोषणा जैसे ही सर्वविदित हुई मन मयूर नाच उठा कि चलो लंबे समय के इंतजार की घड़ियां उल्टी गिनती में परिवर्तित हो चुकी है। मैं भोपाल में आयोजित अंतरा शब्द शक्ति सम्मान 2017 की यादें कभी भी भूल नहीं सकती।

उन यादों में मीठी यादें और जुड़ेंगी सोच-सोच बहुत उत्साहित हो रही थी।पिछले वर्ष मेरी शल्यक्रिया होने से बात करने बैठने में सक्षम न थी, पर इस बार सोचा सब से बहुत -बहुत बातें करूंगी ।3 फरवरी को ठीक 10.30बजे पतिदेवजी, जिजजी के साथ मैं साउथ एवेन्य पहुंची। चि.तन्मय अगवानी कर नीचे बडे कक्ष में ले आए ।मैं मना ही कर रही थी कि बेटे, हम चले जायेंगे पर चि. तन्मय तन्मयता से आतिथ्य सत्कार में लगे रहें।अगवानी से मन खुश हुआ, वहीं टीस हुई की यह काम तो हमें करना था कर रहे थे प्यारे तन्मय जी ।

बड़े कक्ष में आदरणीय कीर्ति जी वर्मा ने मुस्कुराते हुए गले लगाकर स्वागत किया। आदरणीय समकीतजी ने मुस्कुरा कर अभिवादन। आदरणीय प्रीति जी खुद आकर गले मिली। मैं कुछ कहूं खुद ही प्रेमपूर्वक मधुर शब्दों में बोल पड़ी -देवयानी, आपकी तबीयत कैसी है? आप तो जेठानीजी के घर रुकीं हो न! मैं रोमांचित हां-हां कर अंदर से उनकी याददाश्त की दाद दे रही थी ।

सुन्दर मंच ।सूकुन भरा माहौल ।सबसे मिलने की चाहत ।एक दूसरे को पहचानने की कोशिश। फिर जी भर कर मिलना ।आँखों ही आँखों में मिलन की खुशी में ढेर सारी बातें कर लेना ,सब कुछ अच्छा लग रहा था ।

जिससे मैं सर्वप्रथम मिलना चाह रही थी वह थी हमारी आदरणीय राधादीदीजी। उनकी आत्मीयता को नमन। उनका पूरे समय का साथ अच्छा लगा ।उन्होंने घर-परिवार संबंधी बातें करके अपनापन जागृत किया। लगा कोई है जो मुझे समझ रहा है। आ.रमा तेकामजी, वंदना दुबे जी, नमिताजी दुबे वह सभी मेरी बहनें जो मुझे प्रथम अंतरा शब्द शक्ति सम्मान सन् 2017 में मिली थी ,ने मेरी तबियत पूछी।आ.चांडकजी द्वारा उनके परिवार को जाना कि वे 9बहनों के इकलौते भाई है। व्यापार के साथ- साथ चित्रकार, मूर्तिकार, सज्जाकार, साहित्यकार सरस्वती पुत्र है लगा, पुरुषों का प्रतिनिधित्व वह अच्छी तरह कर रहे हैं ।

अतिथि आगमन, मां सरस्वती जी का पूजन, आ.किर्तीजी द्वारा कोकिल कंठ से वंदना भाषा माता चित्र काअनावरण।भाषामाता के स्तुतिगान को जिनका लेखन डॉं. प्रीतिजी द्वारा किया गया सुनाया गया। डॉं.अर्पण जी ने स्वागत भाषण दिया।मुख्य अतिथि आ.डॉं.वैदिकजी का प्रभावी उद्बोधन -'हमें अपने विचारों को विराटता प्रदान कर अन्य भाषाओं को भी जानकर उनके पहलुओं को आत्मसात कर आगे बढ़ना चाहिए..।' अतिथि द्वारा पतंजलि योग प्रचारक प्रकल्प प्रमुख आचार्य, साहित्यकार डॉक्टर आ . हरेराम वाजपेई जी, टेट्स प्रेस क्लब अध्यक्ष प्रवीण कुमार धारीवाल जी ने डॉं.अर्पणजी के साथ हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का आह्वान किया ।

सभी साहित्यकार सम्मान की श्रृंखला में मंच पर पहुंच कर अभिभूत हो रहे थे। कवि कवयित्रियों के चेहरे पर खुशी के साथ यह भी पढ़ने में आसानी हो रही थी कि वह इस मुकाम परअपनी जवाबदारियों के रहते हुए भी कितने संघर्ष पश्चात भाषा साहित्य के सेतु बन रहे है।मेरा नाम पुकारा गया मुझे मेरा शब्द शक्ति सम्मान 2017 गांधीकक्ष, भोपाल का मंच याद आ गया।मैं मंच तक जा नहीं पा रही थी माननीय मनोजजी श्रीवास्तव सहित सभी अतिथिगण नीचे उतर आए थे और मुझे सम्मानित किया।

आ.प्रीतिदी को भी वही दृश्य शत-प्रतिशत याद आ रहा था वे मुझे आज मंच से सम्मान लेने पर खुशी जाहिर कर रहीं थी। 'भाषा सारथी सम्मान' की मुझे बहुत खुशी हो रही थी कि मैं इस योग्य बनी कि मैं भाषा की सारथी हमेशा के लिए बन गयी। मेरे दायित्व अब बढ़ गये है

संचालनकर्ता राशि पटेरियाजी का 'अपनों के बीच अपना संचालन' यादगार रहेगा।आ. प्रीति जी के आभार पश्चात पुनः सभी आपस में मिलकर एक दूसरे की रचनाओं की प्रशंसा में लीन थे।

आ.डॉं.अनिलजी कोरी एवं उनकी अर्धांगिनी श्रीमती विनीताजी पैगवार से दूसरी बार मुलाकात बहुत अच्छी लगी। आ.मीनूजी,अनिलजी चितिंत के साथ छायाचित्र खिचवायें। आ.शिरीन जी को मेरी निगाह ढूंढ रही थी ,वह अपनी पहचान डिंपल्स से जल्दी मिल गई ।आ. देवेंद्र सोनी भाई साहब से मार्गदर्शन प्राप्त किया तो आ.पिंकीजी की शालीनता, नम्रता आकर्षक।सभी नौ पुस्तकों का आवरण पृष्ठ आ.मेघाजी जैन द्वारा बनाए गए उनके माता-पिता का इस अवसर पर सम्मान अभिभूत कर गया।

अब बारी थी खाना खजाने की।स्वादिष्ट भोजन में मांडू की इमली इठला रही थीं।भोजन पश्चात सभी एक एक करके विदा हो रहे थे। मानो विवाह समारोह संपन्न हो चुका हो। घराती के रूप में आ.प्रीतिदी सपरिवार,आ.अर्पणजी सपरिवार अंत में भोजन कर रहे थे । उन्हें छोड़कर वहाँ से निकलना अच्छा नहीं लग रहा था। मेरी मजबूरी कि मुझे अपने पति को चिकित्सक के पास ले जाना था। सच सबसे अधूरी मुलाकात लग रही थीं। सच न दो दिन मिलन समारोह,झाबुआ में रखने की इच्छा शक्ति जागृत हो गई ।आ.समकितजी, आ.प्रीतिजी साहित्यिक व्यक्तित्व के धनी है कि मैं जब उनके सामने जाती हूं तोश्रद्धा से निःशब्द हो जाती हूं ,उन्हें बहुत बहुत बधाई।

आ.अर्पणजी,अध्यक्ष मातृभाषा उन्नयन संस्थान, इंदौर, इंदौर के अंतरा से जुड़े साहित्यकारों को सहयोग देने का आभार । अंतरा परिवार को अंतरा शब्द शक्ति सम्मान 2018 के सफल आयोजन पर बधाई ।

-देवयानी नायक,
झाबुआ (म.प्र.)

अंतरा शब्द शक्ति सम्मान समारोह

जैसे ही मुझे मालूम हुआ है ये समारोह इंदौर से है तो मुझे बहुत खुशी हुई क्योंकि इंदौर में मेरे रिश्तेदार भी है और शादी के पहले मैं उनके यहाँ बहुत रुकी हूँ लेकिन शादी के सीधे दस साल बाद उनके यहाँ जाने का मौका मिला और वो भी एक सम्मान समारोह में और पति और बच्चे साथ में थे तो और भी खुश थी ,

थोड़ा सा मेरे मन में भी एक डर था कि कोई मुझे पहचान पायेगा कि नहीं कोई मुझसे बात करेगा कि नहीं क्योंकि ये मेरा पहला अवसर था लेकिन वहां पहुँचकर ऐसा कुछ नहीं लगा सब एक दूसरे से अच्छे से बात कर रहे थे। बहुत यादगार रहा हर पल और हमेशा रहेगा ,ज्यादा किसी से मिल तो नहीं पाई लेकिन सबको देखा तो भी अच्छा लगा कभी दुबार अवसर मिला तो जरूर सबसे मिलना चाहूँगी,

इतनी खुशी देने के लिए आभार व्यक्त करती हूं आ.प्रीति भाभी एवं आ.अर्पण जी का

-मीना विवेक जैन

गैर जो सभी अपने से लगे....

आमंत्रण मिलते ही थोड़ी दुविधा भी लगी कि चला जाय या दूरी, सर्दी, और समय की बाधाओं से हार कर यहीं से सन्तुष्ट हो जाएं ।

आखिर अंदर से आवाज आई कि चलने पर कुछ तो नया मिलेगा। यही सोच कर सब बाधाओं पर विजय करने का निश्चय किया ।

दो फरवरी रात्रि 10 बजे बूंदी से यात्रा प्रारम्भ की। और विभिन्न यातायात के साधनों का प्रयोग करते हुए सवेरे 6.15 पर इंदौर की धरती के दर्शन हुए ।धुंध में लिपटी हुई इमारते और प्रातः काल में सूर्य का इंतजार करता इंदौर । ऐसे लगा जैसे मेरा भी कहीं न कहीं इंतजार हो रहा होगा ।

सवेरे 7.25 पर ट्रेन से उतर इंदौर की धरती पर अलग ही अनुभूति के साथ पहला कदम रखा । गुलाबी सर्दी ने स्वागत करते हुए आगोश में ले लिया ।

कार्यक्रम 11.00 बजे शुरू होना था अतः प्रतीक्षालय में तरोताजा होकर इंदौर के FM स्टेशनों का आनन्द लेते हुए समय व्यतीत किया ।

प्रातः 9.00 बजे इंदौर के नजारों का लुत्फ लेने के लिये पैदल ही साउथ तुकोगंज के लिये यात्रा प्रारम्भ की । एक दो बार राह भटकने के बावजूद 10 बजे तक होटल साउथ एवेन्यू के भी दर्शन हो गए ।गार्ड से तस्दीक कर समारोह स्थल ग्राउंड हॉल में प्रवेश किया जहाँ माननीय कैलाश जी सिंघल और कैलाश जी मण्डलोई से प्रथम मुलाकात हुई ।जो कि जैसे इंतजार ही कर रहे हो उतनी गर्मजोशी से मिले ।

अंतरा शब्द शक्ति का बड़ा से बैनर से मंच सजा था जिस पर 5....6 खाली कुर्सियां अतिथियों का इंतजार करती लगी। मंच के सामने कुर्सियां अभी खाली ही थी पर मेजबानगण कार्यक्रम की तैयारियों में पुरे जोश से लगे हुए थे। सम्मानित होने वाले साहित्यकार घड़ी की सुइयां आगे बढ़ने के साथ ही अपनी उपस्थिति बढ़ाए जा रहे थे और सभी एक दूसरे से परिचय करते हुए पूर्व पहचान को पुनरस्मृत करते हुए सब अपने से और जाने पहचाने से लगे ।लेकिन प्रत्यक्ष उपस्थिति एक अलग ही अहसास करवा रही थी। सेल्फियों का दौर अपनी रवानी पर था और हॉल पूरी तरह से फोटो सेसन का स्थल लग रहा था।

थोड़ी देर पश्चात अतिथियों के पधारने के साथ ही राशि जी ने मंच संचालन का मोर्चा सम्भाल लिया । सरस्वती दीप प्रज्वलन ,वन्दना के साथ कार्य कर्म का आगाज हुआ। सभी दिग्गज मंचासीन अतिथिगण कुर्सियों को सुशोभित करने लगे, तभी राशि जी ने घोषणा की कि माननीय वैदिक जी को अपरिहार्य कारणों से शीघ्र जाना है इसी कारण से उनको उद्बोधन के लिये आमन्त्रित किया जा रहा है । माननीय वैदिक जी ने अपने उद्बोधन में हिंदी भाषा को महारानी पदवी से नवाज कर सभी भारतवासियों को हिंदी में ही हस्ताक्षर करने के अभियान को और अधिक गति देने का आह्वान किया । ततपश्चात मातृभाषा हिंदी का मूर्त रूप का अनावरण किया गया। साथ ही अंतरा शब्द शक्ति संस्थान और मातृभाषा उन्नयन संस्थान की 9 पुस्तकों का विमोचन भी किया गया। बीच-बीच में कुछ तकनीकी गड़बड़ियों ने भी अपनी उपस्थिति का अहसास करवाया ।

कार्यक्रम के अगले चरण में भारत के कोने -कोने से आये हिंदी के समर्पित साहित्यकारों को अंतरा शब्द शक्ति सम्मान से सम्मानित करने का सिलसिला शुरू हुआ। सम्मानित सभी साहित्यकार सम्मान पाकर गौरवान्वित महसूस कर रहे थे ।

अंतरा शब्द शक्ति सम्मान के पश्चात मातृभाषा सारथी सम्मान भी प्रदान किए गए ।

मुझे भी इस कार्यक्रम में मातृभाषा सारथी सम्मान से सम्मानित होने पर गर्व की अनुभूति हुई ।

कार्यक्रम के बीच-बीच में बिजली की आँख मिचौली चलती रही और उसे राशि जी ने 'काला टीका' शब्दों से सम्बोधित कर उसे भी कार्यक्रम के सकारात्मक प्रतिफल से आशान्वित किया ।

सभी के सम्मानित होने के उपरान्त सामूहिक फोटो सेसन का कार्य किया गया ।

अंत में उदर में मीठे-मीठे व्यंजनों को पहुँचाने का आनन्द लेते हुए सबने एक दूसरे की मीठी यादों को समेट कर जल्द ही दोबारा मिलने का वादा कर अपने अपने घरों को प्रस्थान कर गए ।

-D Kumar(दुर्गेश मेघवाल)

हिन्दी ग्राम क्या हैं?

हिन्दी ग्राम शब्द में ही सम्पुर्ण परिकल्पना समाहित है, एक ग्राम जो सबसे छोटी ईकाई होकर भी समग्र को समेट कर संचालित होता है, उसी उद्देश्य को हिन्दी ग्राम में सहेजा जा रहा है।

हिन्दी ग्राम का मूल उद्देश्य हिन्दी भाषा को रोजगार मूलक व व्यवसाय से जोड़ना है, क्योंकि विश्व की कोई भी भाषा जैसे अंग्रेजी, जापानी, चाईनीज, फ्रैन्च आदि जब तक बाजार से नहीं जुड़ी तब तक उसका विकास सीमित ही रहा है। उसी तरह संस्कृत बाजार से दुर रही तो उसे विलुप्तता की कगार पर ला पहुँचाया, यही हाल हिन्दी का भी हो रहा है, परन्तु हिन्दी को बाजार मूलक बनाने और उसमें रोजगार के अवसर लाने के उद्देश्य से हिन्दी ग्राम की शुरुआत की गई है।

मूलतः हिन्दी ग्राम के माध्यम से विश्व स्तर पर हिन्दीभाषियों के लिए रोजगार के अवसरों को तलाशकर जानकारी उपलब्ध करवाना, हिन्दी का प्रचार करना, हिन्दी में शिक्षा ग्रहण करने के लिए लोगों को प्रेरित करना, हिन्दी शिक्षण से रोजगारोन्मुखी कार्यक्रम संचालित करना, लेखन व रचनाकारों को जोड़ना, भारत में हिन्दी के प्रति प्रेम वर्धन करना, पर्यटन से राजस्व प्राप्त करने वाले राज्यों में हिन्दी का प्रसार कर वहा हिन्दी भाषी पर्यटकों की सहायता करना तथा राज्यों में पर्यटको का रुझान बढ़ाना और राज्यों की राजस्व वृद्धि करना, भारतीय संस्कृति के संरक्षण हेतु हिन्दी का विस्तार करना, हिन्दी की भूमिका से भारतीयता के प्रति जागरुक विदेशीयों को आकर्षित करना और देशभर में हिन्दी से लोगों को जोड़ने के लिए हिन्दी में हस्ताक्षर करने के लिए प्रेरित करना है।

पुस्तक समीक्षा-केदारनाथ 'शब्द मसीहा'

काव्यपथ

डा. अर्पण जैन 'अविचल' से मुलाकात हुई दिल्ली के विश्व पुस्तक मेले में . सौम्य और उर्जावान व्यक्तित्व. बात करने से ही पता चल गया कि अर्पण में एक खास बात है जबकि चर्चा तो प्रीति सुराना बहिन से पहले भी हो चुकी थी इनके बारे में . व्यक्तिगत परिचय से इन्हें समझने में और मदद मिली. अब बारी थी उनके मानस मंथन से रुबरू होने की.

इंदौर यात्रा से लौटते हुए मुझे सौगात स्वरूप मिलीं कुछ किताबें जिनमें काव्यपथ भी थी . आज मौका मिला तो कविताओं से दो-चार हुआ डा. अर्पण जैन 'अविचल' जी की . कुल जमा सत्ताईस कवितायें हैं इस संग्रह में . जो बताती हैं कि छपास की प्यास नहीं उन्हें . जो श्रेष्ठ है वही आना चाहिए पाठकों के सामने. उन्होंने अपनी कविता +काव्यपथ की कल्पना में इसका जवाब भी दिया है .

जो चिंतन को शब्दों में ही सहेजकर
सार्थकता का सशक्त अभिमान बन जाए
जो रस-छंद-दोहा-सोरठा-कवित्त बनकर
शब्दशक्ति से पोषित प्रितिगान बन जाए

कविता से अधिक उनका व्यक्तित्व इन पंक्तियों की गवाही देता है . कविता जीवन से ही प्रस्फुटित होती है और उसके लिए इन पंक्तियों से बेहतर कामना कोई कर भी क्या सकता है . यही तो कविता का कार्य है ...जनमंगल ...सर्वमंगल की कामना .

क्रान्ति के संसाधन जो भाषा से लिए
हिंदी है महान केवल जीत के लिए
निकल रहा है क्रान्ति का पथ संचलन
पर 'अर्पण' के अरमान केवल जीत के हैं

वाकई वे भी हिंदी के उत्थान के लिए अपने मन में जिस श्रद्धा भाव को पाले चल रहे हैं और इस प्रकार हुंकार भर रहे हैं ....यह काव्य मात्र शब्द नहीं हैं बल्कि चुनौती दी गयी है ...ऐसा प्रतीत होता है . उनके कर्मठ व्यक्तित्व और इरादों की द्योतक हैं मानों ये पंक्तियाँ .

माँ के त्याग की कविताओं के बीच पिता का समर्पण कहीं धुंधला सा गया है किन्तु डा. अर्पण जैन 'अविचल' जी नजरों में वह है . उनके पास एक ऐसी दृष्टी है जो पिता के त्याग और अदृश्य आँसुओं को देख भी लेती है और शब्दांकित भी करती है .

हाँ!
उस पिता के माथे की सिलवट
हर कोई नहीं पढ़ पाता ,
तुम एक कोशिश करना
उस महागीता और रामायण को पढने की

भरोसा नहीं होता कि आज के युग में कोई पुत्र ....पिता के लिए इस गहन चिंतन को समझता हो और शब्द देता हो इस तरह भावनाओं को . ऐसा प्रतीत होता है कि अर्पण जी ने पिता रुपी प्रशांत महासागर में सम्पूर्णता से गोता लगाया है .

कश्मीर को लक्ष्य बना लिखी कविता तुम्हारे लिए जीवन से जिस तरह जोड़ी गयी है अद्भुत अनुभूति देती है और साथ ही प्रकृति और अपनी प्रिया से जुड़े होने का सबूत भी .

प्रेमपत्रों की तरह संवाद करते
हैं देवदार भी
कुछ पत्ते मैं भी समेट लाया
हूँ तुम्हारे लिए
सब प्रेम के ही गीत 'अर्पण' हैं
वादियों में
मैं सब कुछ छोड़ लौट आया
हूँ तुम्हारे लिए

'कशमकश' कविता जहाँ प्रिया के प्रेम को समर्पित है तो 'वसुंधरा' भारत की धरती को . दोनों ही कवितायें शब्द चयन और भावों की अभिव्यक्ति की अनुपम मिसाल हैं . 'चिड़िया' कविता को पढ़कर अहसास हुआ उस कोमल मन का जो उस योगनिष्ठ शरीर में है डा. अर्पण जैन 'अविचल' के . वाकई इस सृष्टि के हर जीव से जुड़ने की और अपनत्व की जरुरत है इंसान को .

सुनो !
मैं एक ख्वाब का टुकड़ा लाया था ,
तुम्हारे हर एक ख्वाब को पूरा करने के लिए,
पर इत्तफाक से तुम्हारे विश्वास ने,
उस टुकड़े को ही ख्वाब कर दिया
हाँ !
वही ख्वाबजिसे तुम भी शिद्दत से चाहती हो,
और मैं तो पहले से चाहता था उसे ,
यकीन है हम मिलकर उसे हासिल करेंगे ...

जीवन के विश्वास वृक्ष में ऐसे शब्द संभावनाओं की खाद ही साबित होते हैं . एक पुरुष के मन की कोमलता का पता उसके चिंतन और प्रेम से पता चलता है . 'स्त्री' कविता को पढने के बाद आप उस मन को समझ सकते हैं . जहाँ वे आह्वान करते हैं पुरातन और गली-सड़ी धारणाओं को बदलने का . यही क्रान्ति चाहिए युवा सोच की जो जीवन के साथ समाज और देश को बेहतर बनाए .

देश के महानायकों को उनकी चुनौती 'मगरूर

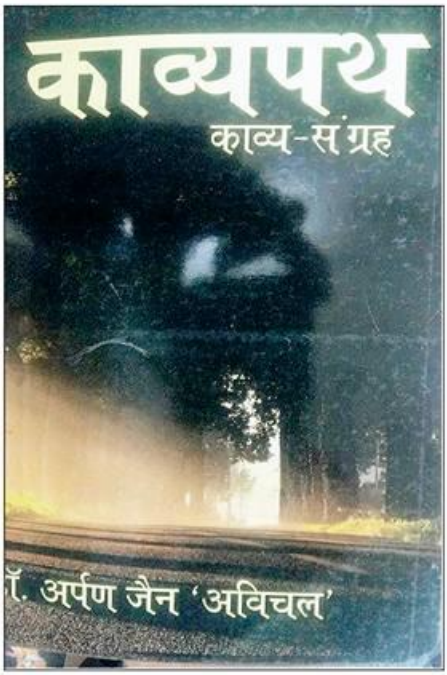

नायक' में देखते ही बनती है . वे चेतावनी के बतौर लिखते हैं-

तुम्हारा घमंड राष्ट्र से बढ़कर होने सा लगा है,
पर याद रहे नायक तुम्हें संविधान सौंपा है

तुम स्वयं के स्वयंभू हो जाने भर को सत्ता का केंद्र मान रहे हो
पर याद रहे नायक तुम्हारे घमंड के आगे देश है ....

अनेकों किताबें मैंने पढ़ी हैं मगर मैं मानता हूँ कि यह किताब मेरे जैसे पाठक के लिए बहुत अहम् है . बहुत ही विचारशील और मन को उद्वेलित करने वाला काव्य संकलन है यह. भाई डा. अर्पण जैन 'अविचल' जी को मैं अपनी अनंत शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ और कामना करता हूँ कि उनकी कलम का यश चहुँ दिश फैले कस्तूरी की सुगंध की तरह .

सर्व मंगलम भवतु

प्रकाशक-के.बी एस. प्रकाशन , दिल्ली
मूल्य-50.00 रुपये
पृष्ठ-32
शब्द मसीहा

दृष्टिकोण-दुनिया डॉ. प्रीति समकित सुराना की नजरों से

पुस्तक समीक्षा
मुकेश दुबे

दुनिया डॉ. प्रीति समकित सुराना की नजरों से

अपनी बात की शुरुआत मशहूर चरित्र अभिनेता तथा उससे भी बड़े विचारक आशुतोष राणा जी के शब्दों से करना चाहूँगा। इस संग्रह की भूमिका में आपने लिखा है, क्योंकि प्रतिभा की सहज प्रवृत्ति होती है अनावृत्त होना, उसे आप कितना भी छुपाइये वह प्रकाशित हो कर ही रहेगी। इसलिए प्रतिभा को पर्दे में रखने के लिए भी एक परिष्कृत प्रतिभा की आवश्यकता होती है।

सटीक हैं यह पंक्तियाँ प्रीति के परिप्रेक्ष्य में।

दुर्ग (वर्तमान में छ. ग.) में जन्मी एम. कॉम., एम. ए. (समाज शास्त्र) और वर्तमान में वासिंसवनी (बालाघाट) में एक व्यवसायिक परिवार में समकित जी सुराना की जीवन संगिनी प्रीति परिचय की मोहताज नहीं है। अंतरा शब्द शक्ति की संस्थापक तथा अनेक पुरस्कारों को गौरवान्वित कर चुकी यह विलक्षण प्रतिभा साहित्यिक व सामाजिक जगत में विशिष्ट पहचान बना चुकी है

दृष्टिकोण प्रीति के सामाजिक, पारिवारिक, राजनैतिक और व्यक्तिगत अनुभवों के मंथन से निकला अनुतोष है जिसमें अमृत के साथ हलाहल भी है।

हर कोई चाहता है अमरत्व ! अपवाद ही होगा जो विषपान करना चाहेगा। विष यदि कंठ से नीचे सरकता है तब मृत्यु अवश्यसंभावी है। ठहर गया जो कंठ में तब इंसान शिव हो जाता है। नीलकंठ कहलाता है।

इस संग्रह में प्रीति ने जिन अनुभवों को साझा किया है, बानगी हैं जीवन में हर्ष व अवसाद के।

गजब की जिजीविषा समाई हुई है इस छुटकी में।

सौम्य, सहज, वात्सल्य व अपनत्व से परिपूर्ण प्रभावशाली व्यक्तित्व परन्तु संवेदनशील रचनाकार। कुशल एंटरप्रेन्योर, ममतामयी माँ, आदर्श पत्नी और समर्पित मित्र प्रीति ने 35 आलेखों जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए थे, इस संग्रह में संकलित किया है।

कभी प्रश्न पूछती है कि 'क्या विचारों की आवश्यकता है' या 'आत्मविश्वास क्यों जरूरी है ?' या 'क्या रावण दहन जरूरी है ?' तो कभी सलाह देती है 'मौसम बदल रहा है दोस्तों अपना खयाल रखियो।' यह भी कहना नहीं भूलती 'अति सर्वत्र वर्जयेत'.... - 'कैसा थेंक्स और कैसा सॉरी।'

महिलाओं के स्वास्थ्य के प्रति भी चिंतित रहती है तभी लिखा है 'महिला स्वास्थ्य समस्याएं-महिलाएं खुद कितनी जिम्मेदार ?'

सामाजिक व व्यक्तिगत पहलुओं पर भी नज़र डाली है प्रीति ने। 'क्या खुद को बदलना होगा', 'मत रोकिये बढ़ते क़दमों को', 'बना रहे रिश्तों का माधुर्य' तथा 'मौन की भाषा' पठनीय व विचारणीय आलेख हैं।

'भारत का असंतुष्ट युवा', सोशल मीडिया का जीवन पर प्रभाव, 'पीढ़ियों का अंतराल-समस्या या समाधान' भी अनुपमेय सर्जना हैं प्रीति की कलम से।

कुल मिलाकर यह कृति प्रीति के शब्दों में जीवन निचोड़ है सामान्य आदमी का।

मेरी ईश्वर से विनय है डॉ. प्रीति समकित सुराना के भावों व दृष्टिकोण को व्यापक आसमान प्रदान करे जिसमें शब्द पाखी विचरें अनन्त तक। हृदयतल से अशेष शुभकामनाएँ आगामी सफ़र के लिए।

बेहद खूबसूरत आवरण व उत्कृष्ट सामग्री के साथ इस संग्रह को सुलभ किया गया है Shivna Prakashan, Sehore द्वारा। 112 पृष्ठों के इस संग्रह का मूल्य है मात्र 175/- रु.।

-मुकेश दुबे

रचनाकार जो शामिल रहे संकलनों में

1.नरेंद्रपाल जैन (ऋषभदेव-उदयपुर) - अनुबंध, अपूर्वा , गुंजन
2.कैलाश मंडलोई (खरगौन) - स्पंदन,कथा सेतु, विचार मंथन
3.पिंकी परुथी (बारां-कोटा) - अपूर्वा, स्पंदन, विचार मंथन
4.गणतंत्र जैन(आगरा) - मकरंद, अनुबंध, अपूर्वा
5.प्रदीप सोनी शून्य(बेगमगंज-रायसेन) - गुंजन, स्पंदन, अपूर्वा
6.कीर्ति वर्मा(बाबई-होशनगबाद) - अनुबंध, अपूर्वा, विचार मंथन
7.वंदना दुबे(धार) - मकरंद, अपूर्वा, विचार मंथन
8.देवेंद्र सोनी(इटारसी) - विचार मंथन अनुबंध,कथा सेतु
9. डॉ प्रदीप 'दीप' (झुंझुनू-राजस्थान) - अनुबंध, अपूर्वा,कथा सेतु, विचार मंथन
10.विनोद तिवारी(गुना) - मकरंद, अपूर्वा , गुंजन,
11.विमला महरिया((झुंझुनू-राजस्थान) - मकरंद, स्पंदन
12.नीरजा मेहता(गाजियाबाद) - कथा सेतु, विचार मंथन
13.मीनाक्षी सुकुमारन(दिल्ली)- कथा सेतु, विचार मंथन
14.कैलाश सिंघल (धामनोद)- स्पंदन, विचार मंथन
15.विनीता पैगवार (जबलपुर)- अपूर्वा, कथा सेतु
16.डॉ अनिल कुमार कोरी(जबलपुर) - अपूर्वा, विचार मंथन
17.अलका चौधरी(बालाघाट) - मकरंद, गुंजन
18.सुनीता लुल्ला(हैदराबाद) - अपूर्वा, गुंजन,
19.रमा तेकाम(बालाघाट) - अनुबंध, विचार मंथन
20.किरण मिश्रा(नोएडा) - अनुबंध, अपूर्वा
21.चंचल पाहुजा(दिल्ली) - मकरंद, कथासेतु
22.गुलशन प्रेम(कोटा) - गुंजन, कथासेतु
23.गुंजन श्रीवास्तव (कटनी)- गुंजन,स्पंदन
24.डॉ मीनू पांडे(भोपाल) - मकरंद, स्पंदन
25.डॉचंद्रकांतित्रिपाठी(भोपाल)- कथा सेतु, विचार मंथन
26.प्रीति अज्ञात (अहमदाबाद)- अनुबंध, विचार मंथन
27.जयकृष्ण चांडक (हरदा)- मकरंद, गुंजन
28.शीतल खंडेलवाल(इंदौर) - गुंजन, स्पंदन
29.आदित्य राजोरिया (डबरा)- मकरंद,
30.राजेंद्र शुक्ल सहज (बालाघाट)- मकरंद,
31.प्रीति बरखा (बालाघाट)- मकरंद
32.कल्पना भट्ट(भोपाल) - कथा सेतु
33.देवयानी नायक(झाबुआ)- स्पंदन
34.शिरीन भावसार (इंदौर)- स्पंदन
35.प्रतिभा अंश(भोपाल) -स्पंदन
36.मीना जैन(वारासिवनी) -स्पंदन
37.राधा गोयल(दिल्ली) - अनुबंध
38.आशीष जैन(रायपुर) - स्पंदन
39.केदारनाद शब्द मसीहा(दिल्ली - कथा सेतु
40.मुकेश दुबे (सीहोर)- कथा सेतु
41.वर्षा चौबे (भोपाल)- अपूर्वा
42.नवनीता नुपूर दुबे(मंडला)-अनुबंध
43.अजय जैन विकल्प(इंदौर) - अनुबंध
44.सूरज तिवारी ,रुद्र (फैजाबाद) - अनुबंध
45.राजेश प्रखर(कटनी) - गुंजन
46.गायत्री सोनी(दतिया) - गुंजन
47.शैली जैन(बैतूल) - अनुबंध
48.हरिवल्लभ 'हरि' (भोपाल)- गुंजन
49.सीमा हरि शर्मा(भोपाल) - अपूर्वा
50.मेघा योगी (गुना)- गुंजन
51.प्रज्ञा जायसवाल(हौशंगाबाद)- अनुबंध
52.रेखा दुबे(विदिशा) - अनुबंध
53. प्रतिभा दीवानी(उज्जैन) - मकरंद,
54. रत्ना बोहरा (आष्टा)- अनुबंध,
55. हेमंत बोर्डिया(इंदौर) - गुंजन
56. कैलाशसोनीसार्थक(नागदा)- गुंजन
57. वसुंधरा राय (नागपुर)- अपूर्वा
58. अनिल चिंतित(पंचकुला,हरियाणा) - गुंजन
59. डॉ अर्पण जैन ''अविचल'' (इंदौर)-स्पंदन, विचार मंथन, कथासेतु
60. मेघा जैन-(बोस्टन-अमेरिका) आवरण चित्रण
61. राशि पटेरिया(उज्जैन) - कार्यक्रम संचालन
62. केबीएस प्रकाशन(दिल्ली)- प्रकाशन सहयोगी
63. मृदुल जोशी (इंदौर) आलेख अभिकल्पी
64. रोहित त्रिवेदी (इंदौर) संवाद सेतु
65. कमल कुमार जैन (इंदौर) सहज साथी

'जब तक हिन्दी को बाजार नहीं अपनाता तब तक लोगों का आकर्षण हिन्दी के प्रति कम रहेगा, जबकि भारत विश्व का दूसरा बड़ा बाजार है।'

चित्र झलकियाँ

हस्ताक्षर बदलो अभियान

प्रतिज्ञा पत्र

मैं,.....प्रतिज्ञा लेता/लेती हूँ कि आज से राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए,राष्ट्र की एकता और अखंडता के हित में स्वयं को समर्पित करते हुए भारतीय संस्कृति और सभ्यता के सम्मान और सुरक्षा हेतु जीवनपर्यन्त तत्पर रहूंगा/रहूंगी । भारत माता और मातृभाषा हिन्दी के सम्मान को सर्वोपरि रखकर अपने हस्ताक्षर हिन्दी में करूँगा/करुँगी।

मैं हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा का सम्मान दिलाने हेतु आरम्भ किये गए महायज्ञ 'हस्ताक्षर बदलो अभियान' में सतत सहभागी रहूंगा/रहूंगी।

भवदीय,

हस्ताक्षर- .....

नाम-.....

पिता का नाम-.....

पता-.....

.....

संपर्क-.....

व्हाट्सअप-.....

अणुडाक (ईमेल)-.....

एस-207, नवीन परिसर, इंदौर प्रेस क्लब, एम. जी. रोड इंदौर

क्या आप बनना चाहते हैं भाषा सारथी

क्योंकि

- आज हिन्दी को विश्वस्तर पर पहचान दिलाने के लिए हमें जुटकर हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना होगा,
- हस्ताक्षर बदलो अभियान को अपने क्षेत्र में संचालित एवं प्रचारित करना होगा,
- हिन्दी लेखन करने वाले साथियों को आय दिलवाने में मदद करनी होगी,
- हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए उसे बाजार मूलक भाषा बनानी होगी,
- हिन्दी साहित्य को आमजन तक पहुँचाना होगा,
- हिन्दी भाषीयों की मदद करना होगी,
- हिन्दी के प्रचार हेतु अपने क्षेत्र में हिन्दी प्रेमियों का समुच्चय बनाकर प्रतियोगीताएं, कार्यक्रम आदि का संचालन करना होगा
- हिन्दी ग्राम सभा का आयोजन करना।
- हिन्दी रथ का अपने क्षेत्र में संयोजन करना,कार्ययोजना बनाकर लोगो को हस्ताक्षर बदलनें के लिए प्रेरित करना ।

और भी बहुत सी गतिविधियाँ जो हिन्दी के लिए करनी होगी,

यदि आप जुड़कर हिन्दी को आगे लाना चाहते है तो आज ही जुड़िए,

मातृभाषा उन्नयन संस्थान *हिन्दी ग्राम* व *अंतरा-शब्दशक्ति* से

सम्पर्क करें

डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'
राष्ट्रिय अध्यक्ष
मातृभाषा उन्नयन संस्थान
संस्थापक- *हिन्दी ग्राम*
सह संस्थापक- *मातृभाषा.कॉम*
प्रधान सम्पादक- *खबर हलचल न्यूज*

डॉ.प्रीति समकित सुराना
राष्ट्रिय उपाध्यक्ष
मातृभाषा उन्नयन संस्थान
संस्थापक- *अन्तरा शब्दशक्ति*
सह संस्थापक- *मातृभाषा.कॉम*
निदेशक- *खबर हलचल न्यूज*

हिन्दीग्राम
भाषा समन्वयक

अन्तरा शब्दशक्ति

अन्तरा शब्दशक्ति सम्मान
(२०१८)

पुस्तक विमोचन सह सम्मान समारोह

सहयोगी संस्थान

मातृभाषा उन्नयन संस्थान

मातृभाषा डॉट कॉम

स्टेट प्रेस क्लब, म.प्र.

वृंमस प्रेस क्लब, म.प्र.

के.बी.एस. प्रकाशन
दिल्ली

www.hindigram.com www.antrashabdshakti.com

सहयोगी संस्थान

मातृभाषा उन्नयन संस्थान — www.matrubhasha.org

मातृभाषा — www.matrubhashaa.com

अन्तरा शब्दशक्ति — www.antrashabdshakti.com

वादीज़ — www.wadieshindi.com

हिन्दीग्राम
भाषा समन्वयक

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

कार्यालय -
एस-२०७, इंदौर प्रेस क्लब, म. गां. मार्ग, इंदौर
(मध्यप्रदेश) ४५२००१
संपर्क: (का.) ०७३१-४९७७४५५, (दू) ७०६७४५५४५५
अणुडाक- hindigramweb@gmail.com
अंतरताना- www.hindigram.com

www.hindigram.com

www.antrashabdshakti.com